RNI NO. : MPHIN33094

धार्मिक बाल त्रैमासिक पत्रिका

चहकती चेतना

वर्ष : 18 वां
जुलाई से सितंबर 2025
अंक : 69 वां

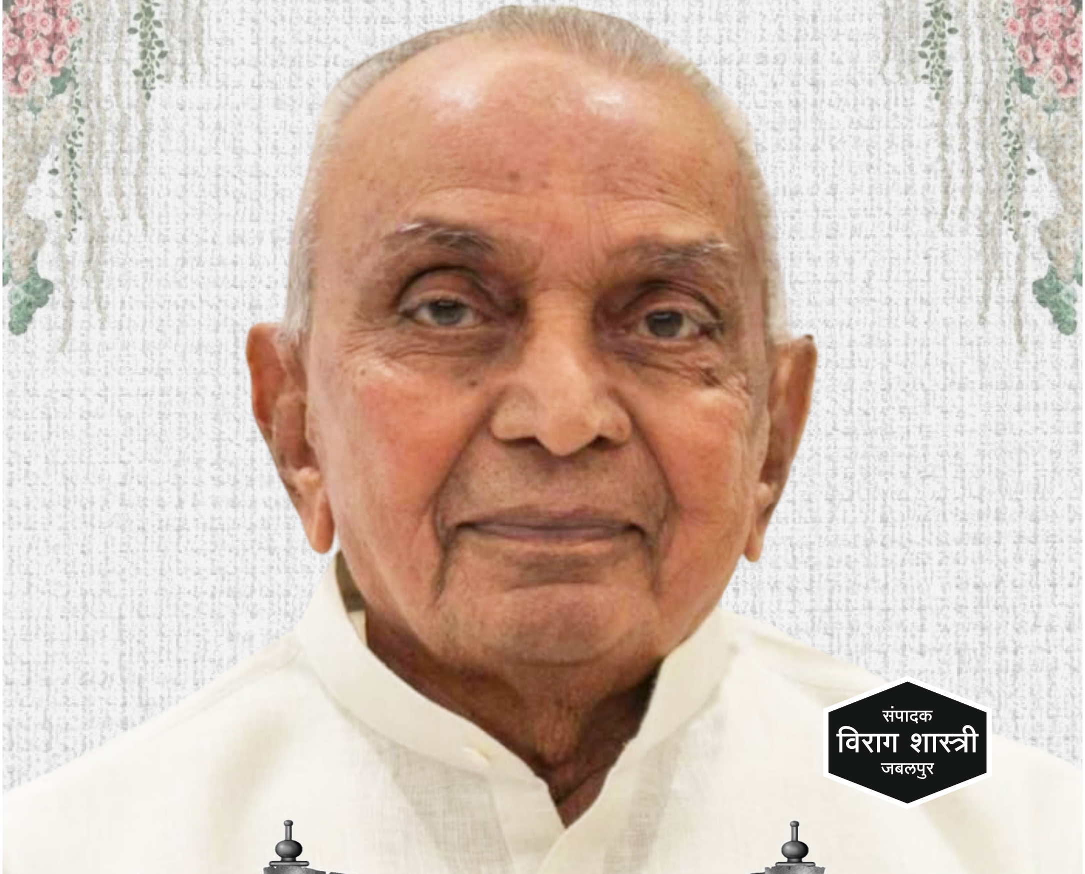

संपादक
विराग शास्त्री
जबलपुर

चहकती चेतना के परम संरक्षक
श्री अनंतराय ए. सेठ (मुम्बई)
को भावपूर्ण श्रद्धांजलि
5 मई 2025

प्रकाशक - सूरज बेन अमुलखराय सेठ स्मृति ट्रस्ट, मुंबई
संस्थापक - आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन, जबलपुर (म.प्र.)

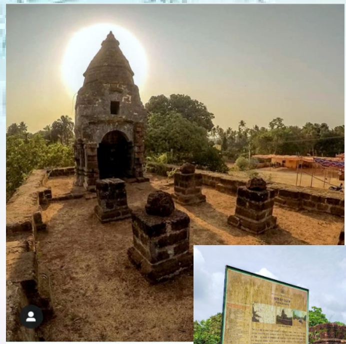

क्या आप जानते हैं कि

गोवा जैन धर्म

का प्रमुख केन्द्र था...

भारत का प्रसिद्ध राज्य गोवा अपनी प्राकृतिक सौन्दर्य और शांत वातावरण के लिये प्रसिद्ध है। गोवा भारत के प्रसिद्ध पर्यटक स्थलों में शामिल है। पर क्या आप जानते हैं कि गोवा किसी समय जैन समाज का प्रमुख केन्द्र था। एक समय गोवा में जैन राजा का शासन था और यहाँ लाखों की संख्या में जैन समाज रहा करती थी। गोवा में बंदरगाह होने से यहाँ विदेशों से माल आया करता थी और जैन व्यापारी बड़ा व्यापार करते थे।

गोवा के कोरगाओ, कुडनेम, बांदीवडे, चंदोर, कोथम्बी, नरोआ स्थानों का सम्बन्ध जैन धर्म से रहा है। ये सभी गांव नदी किनारे बसे हुये हैं। कदंब शासन के दौरान शासकों ने सभी धर्मों को सन्मान दिया इस कारण यहाँ जैन धर्म का विकास होता रहा।

पोंडा के चंद्रकांत पाटिल कहते हैं कि गोवा में कभी जैन बस्तियाँ हुआ करतीं थीं। गोवा के विभिन्न भागों में मिलने वालीं जैन मूर्तियाँ, मंदिर, शिलालेख जैन धर्म की व्यापकता और समृद्धि प्रसिद्ध करते हैं।

भगवान ऋषभदेव को समर्पित कुडनेम गांव का प्राचीन जैन मंदिर दसवीं शताब्दी में गुर्जर समुदाय द्वारा बनाया गया और यह मंदिर पन्द्रहवीं शताब्दी में खण्डहर हो गया। इसकी प्रतिमायें पुरातत्व विभाग के संग्रहालय में रखीं गईं हैं।

गुर्जरों ने 1150 ई. में नरवे, बिचोलिम में जैन मंदिर का निर्माण कराया। भगवान पार्श्वनाथ की एक मूर्ति हिंडोलवाड़ा नरवे में प्राप्त हुई।

गोवा के बंदोरा में बाईसवें तीर्थंकर भगवान नेमिनाथ का एक प्राचीन मंदिर राजा श्रीपाल द्वारा बनवाया गया। कोथम्बी में कुबेर और तीर्थंकरों की यक्ष -यक्षिणियों की मूर्तियाँ जीर्ण - शीर्ण हालत में थीं, इन्हें अब गोवा के मूर्ति संग्रहालय में रखा गया है।

साल्सेट चंदोर में पहलली जैन मूर्ति की खोज फादर हेनरी हेरास ने अपने एक अभियान के दौरान की थी।

आध्यात्मिक, तात्विक, धार्मिक एवं नैतिक बाल त्रैमासिक पत्रिका

चहकती चेतना

प्रकाशक : श्रीमति सूरजबेन अमुलखराय सेठ स्मृति ट्रस्ट, मुम्बई
संस्थापक : आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाऊन्डेशन, जबलपुर म.प्र.
संपादक : विराग शास्त्री, जबलपुर
डिजाइन/ग्राफिक्स : गुरुदेव ग्राफिक्स, जबलपुर

परमशिरोमणि संरक्षक

- श्रीमती स्नेहलता धर्मपत्नि जैन बहादुर जैन, कानपुर
- डॉ. उज्जवला शहा-पंडित दिनेश शहा, मुम्बई
- श्री अजित प्रसाद जी जैन, दिल्ली,
- श्री मणिभाई कारिया, ग्रांट रोड, मुंबई
- कु. अनन्या सुपुत्री श्री विवेक जैन बहरीन

परम संरक्षक

- श्री अनंतराय ए.सेठ, मुम्बई, श्री प्रेमचंद बजाज, कोटा
- श्रीमति आरती पुष्पराज जैन, कन्नौज उ.प्र.
- श्री श्रेणिक विनयजी लुहाडिया, वर्ली, मुंबई
- श्रीमति भारती बेन - डॉ. विपिन भायाणी, अमेरिका
- श्रीमति कोमल-नीरज जैन, नीरू केमिकल्स, दिल्ली

संरक्षक

- श्री आलोक जैन, कानपुर
- श्री सुनील भाई जे. शाह, भायंदर, मुम्बई
- Agraeta Technik P. Ltd., Virar, Thane MH.
- श्री निमित्त शाह, कनाडा
- श्री भरत भाई टिम्बड़िया, कोलकाता/ श्री कमलेश भाई टिम्बड़िया, राजकोट

परम सहायक :

- श्री प्रदीपजी चौधरी, किशनगढ़
- श्री सुरेश पाटोदी, कोलकाता

1.	सूची	1
2.	संपादकीय	2-3
3.	भारत में सबसे प्राचीन सीमंधर....	4
4.	सम्राट अशोक हमारी पौराणिक धरोहर	5
5.	सॉरी मॉम	6-7
6.	लघुवार्ता-	8
7.	करनी का फल	9
8.	अहिंसा परमो धर्मः	10
9.	अब नहीं दें	11-12
10.	भारत देश के विकास...	13-14
11.	दसधर्म कवितायें	15-19
12.	मान किसका रहा	20
13.	स्वतंत्रता के लिये सर्वस्व...	21
14.	जिनधर्म श्रद्धान	22
15.	वे कौन थे	23
16.	प्रेरक प्रसं	24
17.	आपके प्रश्न उत्तर.....	25
18.	समाचार	26-28
19.	कबूतरों की बीट	29-30
20.	पर्यावरण सुरक्षित	31-32

प्रकाशकीय व संपादकीय कार्यालय
"चहकती चेतना"
सर्वोदय, 702, जैन टेलीकॉम,
फूटाताल, लाल स्कूल के पास, जबलपुर म.प्र. 482002
9300642434, 7000104951
chehaktichetna@yahoo.com

चहकती चेतना के पूर्व प्रकाशित संपूर्ण अंक प्राप्त करने के लिये लॉग ऑन करें
www.vitragvani.com

मुद्रण व्यवस्था : स्वस्ति कम्प्यूटर्स, जबलपुर

सदस्यता शुल्क - 500/- रू. (तीन वर्ष हेतु)
1500/- रू. (दस वर्ष हेतु)

सदस्यता राशि अथवा सहयोग राशि आप "चहकती चेतना" के नाम से ड्राफ्ट/चैक/मनीआर्डर से भेज सकते हैं। आप यह राशि कोर बैंकिंग से "चहकती चेतना" के बचत खाते में जमा करके हमें सूचित सकते हैं।
पंजाब नेशनल बैंक, फुहारा चौक, जबलपुर
बचत खाता क्र.- 1937000101030106
IFS CODE : PUBN0193700

PAYTM no.: 9752756445 भी कर सकते हैं।

चहकती चेतना

संपादकीय

अपने पद और प्रतिष्ठा के अनुरूप मर्यादाओं का पालन

हमारा दायित्व

इस संसार की यात्रा में हमें अनेक तरह के दायित्वों का निर्वाह करना पड़ता है। इनमें कुछ माता, पिता, भाई, बहन, पति, पत्नी जैसे परिवारिक होते हैं, कुछ अध्यक्ष, महामंत्री, ट्रस्टी जैसे सामाजिक और कुछ शिक्षक, इंजीनियर, डॉक्टर जैसे जॉब या दुकानदार जैसे व्यवसायिक। कई बार परिवार, समाज और धर्म मिलकर विशिष्ट प्रतिभा देखकर विशिष्ट कार्यों को संपन्न करने का दायित्व सौंपता है। इन्हें समाज में विशेष आदर की दृष्टि से संत, विद्वान जैसे गरिमापूर्ण नामों से संबोधित किया जाता है। इन सभी दायित्वों में एक चीज बहुत कॉमन है जिसे विश्वास कहा जाता है। एक पुत्र को अपने पिता पर विश्वास है कि पिता जीवन में जो भी करेगा उसमें पुत्र का हित ही होगा, पिता को अपनी बेटी पर विश्वास है कि बेटी चाहे शैक्षणिक क्षेत्र में सफल हो या असफल परन्तु शील सुरक्षा के मामले में अपने परिवार को कभी भी कलंकित नहीं करेगी, एक पति को अपनी पत्नी पर इतना विश्वास है कि पत्नी उसके जीवन और प्रतिष्ठा के खातिर अपना सर्वस्व समर्पण कर देगी, इसी तरह पत्नी को अपने पति पर पूर्ण विश्वास है कि उसका पति भले ही लौकिक सुख सुविधायें पूरी न दे पाये पर पत्नी के प्रति उसी निष्ठा अटूट रखेगा। समाज को विश्वास है कि समाज के अध्यक्ष, मंत्री, ट्रस्टी अपने व्यक्तिगत हित के लिये बल्कि समाज के हित के लिये समभाव से समर्पित रहेंगे। शिक्षक अपने अध्यापन के दायित्वों से, डॉक्टर अपने चिकित्सा कार्य को सेवा भाव से, दुकानदार ईमानदारी से अपने पद का निर्वहन करेंगे।

इन सबके साथ सबसे महत्वपूर्ण है संत और विद्वान क्योंकि ये मात्र धन अथवा लौकिक हितों से सम्बन्धित नहीं रखते बल्कि यह आस्था का वेदी पर श्रेष्ठता से विराजमान पद हैं। विद्वान से कोई लौकिक सम्बन्ध न होने पर भी यह पद सबसे विश्वसनीय और पूज्य होता है।

परन्तु दुःखद बात यह है कि आज सारे ही पद अपना विश्वास और मर्यादायें खोते जा रहे हैं और इससे भी दुःखद बात यह है कि किसी को भी अपराधबोध भी नहीं हो रहा। पिता के द्वारा पुत्र की हत्यायें, पत्नी के द्वारा पति की किसी अपराधी की तरह

चहकती चेतना

प्लानिंग करके हत्या करना, बेटियों का बॉयफ्रेंड कल्चर और शील का सत्यानाश, पति का मामूली सी बात पर पत्नी को मारना पीटना, तलाक दे देना, शिक्षक का मूल धर्म अध्यापन के लिये उत्साह न होना, व्यवसाय की बड़ी इमारत पर बेईमानी और छलकपट की नियत होना, डॉक्टर के द्वारा धन के लिये मरीज के साथ किसी खिलौने के तरह व्यवहार करना जैसी घटनायें मन को आंदोलित करतीं हैं। विडम्बना यह है कि हम दूसरे व्यक्ति को ईमानदार देखना चाहते हैं पर स्वयं भ्रष्ट रहना चाहते हैं।

पर इन सबसे अधिक खतरनाक है संतों और विद्वानों को अपने पद के विरुद्ध जघन्य आचरण। जब व्यक्ति चारों ओर से दुखी हो जाता है तो उसे धर्म ही शरण के रूप में दिखाई देता है और आत्मशांति के लिये इन संतों और विद्वानों के शरण में आता है। यहाँ वह बिना किसी शर्त के मात्र आत्मकल्याण और कुछ पल सुकून की आशा से चला आता है और अपनी श्रद्धा इन संतों और विद्वानों को समर्पित कर देता है। कई बार इन्हें वह भगवान से कम नहीं मानता और जब उसे पता चलता है कि हम जिसे सर्वस्व मानकर बैठे थे उसका चारित्र तो सामान्य व्यक्ति से ज्यादा गिरा हुआ है तो उसके पास रोने के सिवा कुछ नहीं रह जाता। उसे कोई रास्ता नहीं सूझता कि अब वह किसके पास जाये ... ?

इसलिये समाज में आत्मशांति के सूत्रों के प्रवक्ता विद्वानों को अपने आचरण से एक आदर्श स्थापित करना चाहिये। उनका आचरण भले प्रतिमाधारी जैसा न हो पर इतना निम्न न हो जाये कि उनका नाम लेने पर जिव्हा भी संकोच करने लगे। एक बार श्रद्धा टूटने पर कहीं ऐसा न हो शांति की आशा में धर्म की शरण में आया जीव धर्म से ही विमुख हो जाये। यह एक ऐसा अपराध होगा कि जिसकी सजा पीढ़ियों को भुगतना होगा इसलिये हमारी भाषा, खान-पान, वेशभूषा, चरित्र कम से कम समाज की मर्यादाओं के अनुकूल होना चाहिये।

आजकल बच्चे भी उच्च शिक्षा के लिये बड़े शहरों में जा रहे हैं। वहाँ वे हॉस्टल या पीजी में रहकर अध्ययन करते हैं। वहाँ उन्हें देखने वाला या टोकने वाला कोई नहीं होता पर बच्चों को ये सोचना होगा कि आपको शिक्षा के लिये बाहर भेजने के पीछे माता-पिता का अथक श्रम, बच्चों के भविष्य के प्रति उनकी चिंता, एक सुरक्षित जीवन के स्वप्न और असीम भावनायें जुड़ीं होतीं हैं। बच्चे जब बाहर जाकर कुसंगति में पड़ जाते हैं, व्यर्थ में रुपये बरबाद करते हैं, पढ़ाई छोड़कर मोबाइल में घंटों बरबाद करते हैं तो वे बच्चे अपने माता - पिता के सपनों की हत्या करते हैं। सफलता या असफलता मिलना बाद की बात है परन्तु अपने प्रयासों में कमी नहीं होना चाहिये।

आज का समय बड़ा कठिन है, हर कदम संभलकर चलने की आवश्यकता है। आशा है समाज का हर व्यक्ति अपने पद और कर्तव्य का ईमानदारी से पालन कर अपने वजूद को सार्थक करेगा।

– डॉ. विराग शास्त्री

भारत में सबसे प्राचीन सीमंधर भगवान की प्रतिमा

राजस्थान के भरतपुर जिले में बयाना नाम के नगर में भगवान सीमंधर स्वामी की 500 वर्ष प्राचीन डेढ़ फुट ऊंची सफेद संगमरमर पाषाण की अति मनोज्ञ प्रतिमा विराजमान है। हिन्दू शास्त्रों में बयाना को बाणासुर की नगरी श्रोणितपुर बताया गया है। यहाँ श्रीकृष्ण के पोते अनिरुद्ध का विवाह बाणासुर की बेटी ऊषा से हुआ था। इस नगर के पास चांदनगांव बसा हुआ है जहाँ पर कई सौ वर्ष पूर्व भगवान महावीर स्वामी प्रतिमा टीले से प्राप्त हुई थी।

इस नगर में दो प्राचीन दिगम्बर जिनमंदिर हैं। इनमें विराजमान सभी प्रतिमायें 800 से 1500 वर्ष प्राचीन हैं। एक बार यहाँ के श्रावक श्री बुद्धालालजी जैन को एक प्रतिमा के सामने अन्य प्रतिमा को हटाकर प्रक्षाल करने पर मालूम हुआ कि जिस प्रतिमा को अब तक चिन्ह न दिखाई देने के कारण चन्द्रप्रभु भगवान की प्रतिमा मान रहे थे वह प्रतिमा तो वास्तव में भगवान सीमंधर स्वामी की है। इस प्रतिमा की प्रशस्ति में लिखा हुआ है कि - ऊँ नमः संवत् 1507 वर्षे वैशाख सुदी 6 शुक्र पुनवर्सु नक्षत्रे श्री तोमरवंश डूंगरेश राज्ये श्री काष्ठसंघे भट्टारक श्री गुणुकीर्ति यशकीर्ति कान्वयो गोत्रे संघ टुवेकं लाभो धनो... पुत्रा। बीच में लिखा है - दूर से विदेहाकौ तीर्थकर्ता श्री सीमंधर स्वामि संसार सकामहा। जहाँ पर बिन्दु हैं वहाँ की प्रशस्ति पढ़ने में नहीं आ सकी। इस प्रतिमा के दर्शन करके पूज्य गुरुदेवश्री अत्यंत भाव विभोर हो गये थे और बोले पंचम काल में इस भरत क्षेत्र में सीमंधर भगवान का विरह है। इस प्रतिमा के दर्शन करने प्रसिद्ध विद्वान पण्डित खेमचंदभाई, श्री पूरनचंदजी गोदिका जयपुर, पण्डित नेमीचंदजी पाटनी आगरा, श्री महेन्द्रकुमारजी सेठी जयपुर आदि पधारे थे।

बयाना नगर मथुरा और आगरा के पास है। यहाँ से अतिशय क्षेत्र महावीरजी भी नजदीक है।

सम्राट अशोक
हमारी पौराणिक धरोहर

भारत के अंतिम मुकुटबद्ध राजा - **सम्राट अशोक**
पिता का नाम - **बिम्दुसार**
माता का नाम - **सुभद्राणी**

जिस सम्राट अशोक के नाम के आगे संसार के सारे इतिहासकार महान शब्द लगाते हैं।

जिस सम्राट का राज चिन्ह अशोक चक्र भारतीय अपने ध्वज में लगाते हैं।

जिस सम्राट के राज चिन्ह अशोक स्तंभ के चारमुखी शेर को राष्ट्रीय प्रतीक मानकर भारत में शासन चलाया जाता है और यह भारत की अंतर्राष्ट्रीय पहचान का एक चिन्ह है।

जिस अशोक के नाम पर भारतीय सेना में वीरता के लिये सबसे बड़ा युद्ध सन्मान अशोक चक्र दिया जाता है।

जिस सम्राट के पहले या बाद में कभी ऐसा कोई भी राजा या सम्राट नहीं हुआ जिसने अखंड भारत आज का नेपाल, बंग्लादेश, पूराभारत, पाकिस्तान, अफगानिस्तान पर एक छत्र राज्य किया हो।

सम्राट अशोक के समय में ही 23 विश्वविद्यालयों की स्थापना की गई जिसमें तक्षशिला, नालंदा, विक्रमशिला, कंधार आदि प्रमुख विश्वविद्यालय थे। इन विश्वविद्यालयों में छात्र विदेश से उच्च शिक्षा प्राप्त करने आते थे।

जिस सम्राट के शासनकाल को विश्व के सभी बुद्धिजीवी और इतिहासकार भारतीय इतिहास का स्वर्णिम काल मानते हैं।

जिस सम्राट के शासन काल में विश्व गुरु था और भारत को सोने की चिड़िया कहा जाता था।

जिस सम्राट के शासनकाल में सबसे विख्यात महामार्ग ग्रेंड ट्रंक रोड जैसे कई राजमार्ग बने। 2000 किमी लंबी सड़क पर दोनों ओर पेड़ लगाये गये। मानवों के साथ पशुओं के लिये हॉस्पिटल खोले गये। पशुओं का वध बंद कराया गया।

सम्राट अशोक के बाद कुणाल राजा बने और कुणाल के बाद सम्प्रति देश के राजा बने।

ऐसे सम्राट अशोक जैन थे और सम्राट अशोक पिता चन्द्रगुप्त मौर्य ने राजपाट छोड़कर चाणक्य मुनिराज से दीक्षा ली ली थी।

सॉरी मम्मी !

सुमन ओबेरॉय, भोपाल(म.प्र.)

अनायरा कक्षा में हमेशा प्रथम आती है, इसीलिये उसे टीचर्स भी बहुत प्यार करते हैं और मम्मी-पापा भी। पर उसके मन में हमेशा यह डर बना रहता है कि कोई और बच्चा उससे आगे न निकल जाए। वह पांचवीं कक्षा में सर्वप्रथम रही। गर्मी की छुट्टियों में भी वह छठी कक्षा की किताबें पढ़ती रही ताकि वह सबसे आगे रहे।

छुट्टियों के बाद स्कूल खुला। पहला दिन था, बच्चे बहुत प्रसन्न थे। एक-दूसरे को बता रहे थे कि उन्होंने छुटि्टयां कैसे बिताईं, मगर अनायरा का ध्यान उनकी बातों में नहीं लग रहा था। वह तो जल्द से जल्द यह जान लेना चाहती थी कि जो नये चार विद्यार्थी आए हैं, उनमें से कोई उसकी टक्कर का तो नहीं है, लेकिन उसे कुछ पता नहीं चल पाया।

जब पढ़ाई ने जोर पकड़ा तो उसने देखा कि ईरा नाम की लड़की पढ़ाई में ही नहीं, खेल-कूद में भी उससे ज्यादा होशियार है। वह स्वभाव की भी बहुत अच्छी है। क्लास के सभी बच्चे उसे बहुत पसंद करने लग गए हैं। टीचर्स भी उस पर ज्यादा ध्यान देने लगे। अनायरा को यह सहन नहीं हो पा रहा था। वह दिल ही दिल में ईरा से जलने लगी। हर समय उसे यही चिंता सताती कि पहली ही परीक्षा में यदि ईरा प्रथम आ गई तो सब उसे अधिक प्यार करने लग जाएंगे, सबका ध्यान उसकी तरफ हो जाएगा, मैं पीछे रह जाऊंगी।

परीक्षा की तिथि घोषित हो गई। पहली परीक्षा हिन्दी की थी। परीक्षा से एक दिन पहले अनायरा की मम्मी उसे पढ़ाने बैठीं, जैसे ही उन्होंने उसका स्कूल बैग खोला, उसमें किसी और बच्चे की हिन्दी की पुस्तक और नोट बुक देखकर हैरान रह गईं। उन्होंने अनायरा से पूछा कि इस पर ईरा नाम लिखा है, यह ईरा की पुस्तक और नोट-बुक तुम्हारे बैग में कैसे आईं?"

सुनते ही अनायरा के चेहरे का रंग उड़ गया। वह हकलाते हुए बोली, "मुझे नहीं पता मम्मी..." उसके चेहरे के हावभाव देखकर मम्मी समझ

उन्होंने सख्ती से पूछा तो अनायरा सुबकने लगी। उसने मम्मी को बताया कि "मैंने लंच ब्रेक में उसकी पुस्तक और नोट-बुक अपने बैग में डाल ली ताकि वह आज पढ़ न पाए और उसके नम्बर कम.....," सुनकर मम्मी को बहुत गुस्सा आया। उन्होंने कहा, "अनायरा तुमने बहुत ही बुरा काम किया है, इसे चोरी कहते हैं।"

'चोरी' शब्द सुनकर अनायरा घबरा गई।

"दूसरे, तुम सोचो कि आज ईरा कितनी परेशान हो रही होगी? अगर यही हरकत ईरा ने तुम्हारे साथ की होती तो तुम्हें कितना गुस्सा आता? तुम्हें अपनी मेहनत से आगे बढ़ना चाहिए- दूसरों को हानि पहुंचाकर नहीं।"

"तीसरी बात, ईरा को अपनी प्रतियोगी मानो दुश्मन नहीं। यदि वह तुमसे अधिक होशियार है तो तुम और अधिक मेहनत करो। तुम सोचो अगर तुम्हारे सामने कोई चुनौती नहीं होगी तो तुम और अधिक मेहनत करने की कोशिश ही बंद कर दोगी। तुम तो यही सोचोगी कि और कोई तो तुमसे आगे निकल ही नहीं सकता, यह तुम्हारे लिए अच्छा नहीं है।"

मम्मी ने अनायरा से कहा कि अपनी स्कूल डायरी दो, मैं ईरा की मम्मी को फोन लगाती हूं...।

अनायरा डर के मारे रोने लगी, "नहीं मम्मी नहीं.... कल ईरा सबको बता देगी कि मैंने चोरी की है.... ,"

अनायरा की मम्मी ने स्कूल से ईरा का नम्बर लेकर उसकी मम्मी को बताया कि ईरा की बुक और नोट-बुक अनायरा के बैग में हैं, आप घर का पता बता दीजिए, मैं अभी भेजती हूं। आधे घंटे में ही बुक और नोट-बुक ईरा को मिल गईं। घर में रोती हुई ईरा ने चैन की सांस ली।

सारी परीक्षाएं हो गईं। नियत समय पर परीक्षा परिणाम भी आ गया। अनायरा इस बार भी कक्षा में प्रथम आई। ईरा ने जब उसे बधाई दी तो अनायरा ने उसे गले लगा लिया।

घर आकर जब मम्मी को रिजल्ट दिखाया तो मम्मी ने उसे प्यार से चूम लिया और कहा, "देखो, अगर तुमने ईरा को धोखा दिया होता तो तुम हमेशा अपराध भाव यानी 'गिल्ट' में रहतीं, तुम इतनी खुश नहीं हो पातीं। तुम्हें अपनी मेहनत पर विश्वास होना चाहिए। सच्ची खुशी तो मेहनत से प्राप्त हुए फल से होती है - चोरी से प्राप्त फल से नहीं।

अनायरा ने मम्मी के गले में बाहें डालकर कहा, "सॉरी मम्मी, अब मैं समझ गई हूं।"

■■

लघुवार्ता

भाव हिंसा का फल

मध्यलोक के अंतिम समुद्र में एक हजार योजन का लम्बा एक राघव मच्छ रहता है। उसकी आंख की पलकों पर एक तंदुल मच्छ बैठा रहता है। राघव मच्छ जब मुंह खोलता है तो उसके मुंह में समुद्र में रहने वाले अनेक छोटे- छोटे प्राणी उसके मुंह में चले जाते हैं और उनमें से अनेक प्राणी कोई कान से, कोई नाक से और कोई मुंह से बाहर निकल जाते हैं। तंदुल मच्छ सोचता है कि ये राघव मच्छ कितना मूर्ख है इतने प्राणी इसके मुंह में अपने आप ही आते हैं और यह उन्हें छोड़ देता है। इसकी जगह मैं होता तो सारे प्राणियों को अपना भोजन बना लेता। इन दुर्भावों के फल में तंदुल मच्छ सातवें नरक में चला जाता है।

रत्न की पहचान

आज नाविक सुबह होने के पहले ही अपनी नाव से नदी के किनारे पहुँच गया। अंधेरे में उसका पैर किसी चीज से टकरा गया। अंधेरे में टटोलकर देखा तो पत्थरों से भरी हुई एक कपड़ों की थैली थी। उसे उठाकर नाव के पास गया और अपनी गरीबी के बारे मे सोचने लगा। उसे चिंता थी कि गरीबी में उसका जीवन कैसे चलेगा पत्नी और बच्चों के खर्च कैसे पूरे करेगा खाली बैठे-बैठे हुये सोचते हुये थैली से एक एक करके पत्थर फेंकता रहा। उसके नजर तो पानी की ओर थी पर मन कहीं और। सुबह होने लगी और ध्यान भंग होने पर नाविक ने अपना हाथ देखा तो घबरा गया। उसने जिन्हें पत्थर समझकर पानी में फेंक दिया था वे पत्थर नहीं बल्कि मूल्यवान रत्न थे। अब उसके हाथ में एक ही पत्थर रहा गया था। वह रोने चिल्लाने लगा। अंधेरे के कारण और ध्यान नहीं होने के कारण सारे रत्न पानी में फेंक दिये थे। लेकिन वह नाविक भाग्यशाली था कि क्योंकि उसके हाथ में एक रत्न रह गया था उसे बेचकर वह अपनी जीवन की सारी समस्यायें हल कर सकता था।

इस जीव ने अनंत बार मनुष्य पर्याय धारण की परन्तु मिथ्यात्व के अंधेरे में संसार के सुख के लिये अमूल्य मानव पर्याय बरबाद करता रहा। यदि एक बार ज्ञान सूर्य के प्रकाश में अपनी रत्नत्रय निधि को देखा होता और उसको संभाला होता तो अनंत काल का दुख मिट गया होता। अब भी अवसर है हम इस अमूल्य मनुष्य पर्याय में रत्नत्रय की प्राप्ति कर ली तो हमें अनंत काल तक आत्मिक सुख की प्राप्ति होती रहेगी।

करनी का फल

महाराज जयसिंह जंगल में प्यास से तड़प रहे थे। ऐसा लग रहा था कि यदि तुरंत पानी नहीं मला तो प्राण ही निकल जायेंगे। कुछ दूर आगे चलने पर उन्हें एक झोपड़ी दिखाई दी। झोपड़ी के सामने पहुँचकर उसने आवाज लगाई तो एक किसान बाहर आया। राजा ने उस गरीब किसान ने पानी मांगा। किसान ने राजा को मटके का ठंडा जल पिलाया और उसके बाद दूध और चावल की स्वादिष्ट खीर खिलाई।

राजा को आज का भोजन बहुत स्वादिष्ट लगा। राजा ने किसान को अपना परिचय दिया और एक कागज में कुछ लिखकर किसान को देते हुये कहा - जब कभी तुम पर कोई संकट आये तो मेरे पास आना। मैं जयपुर रहता हूँ। इतना कहकर राजा चला गया। किसान ने वह कागज अपनी स्त्री को दे दिया।

कुछ दिन बाद राज्य में अकाल पड़ा। अनाज के बिना लोग एक - एक दाने को तरसने लगे। चारों ओर त्राहि-त्राहि करने लगे। चारों ओर लोग बहुत परेशान थे। ऐसे कङ्गिन समय में किसान की पत्नी को राजा के वचन की याद आई और उसने अपने किसान पति को राजा से सहयोग मांगने के लिये कहा।

किसान कुछ दिन में जयपुर पहुँच कर वहाँ राजभवन में राजा के सामने भी पहुँच गया। राजा उस समय भगवान की पूजा कर रहा था। बहुत देर तक राजा की क्रियायें देखकर राजा से कहा - राजन्! आप बार - बार हाथ जोड़कर जमीन पर पटक रहे थे और अपना सिर पटक रहे थे। इस बीमारी का कुछ इलाज कराओ।

राजा ने समझाया - भाई!यह बीमारी नहीं, भगवान से प्रार्थना कर रहा था।

किसान ने पूछा - आप क्या प्रार्थना कर रहे थे ?

राजा ने कहा - अपने और राज्य के नागरिकों के लिये सुख संपत्ति के साधन मांग रहा था।

तो किसान बोला - अरे! हम तो आपको राजा मान रहे थे पर आप भी भिखारी हैं। हम आपसे क्या मांगें? हम भी भगवान से ही मांग लेंगे।

भाई ! भगवान ही सबको देता है। राजा ने समझाते हुये कहा।

किसान ने पूछा - हम मांगेगे तो भगवान हमको भी दे देगा ?

अहिंसा परमो धर्म

बादशाह जहांगीर ने सुना कि जैन विद्वान पण्डित बनारसीदास जी हमेशा सत्य बोलते हैं तथा जैन लोग स्वभाव से अहिंसक होते हैं। यह प्रशंसा सुनकर बादशाह ने सोचा कि पण्डित बनारसीदास की परीक्षा करना चाहिये। यह सोचकर बादशाह ने एक योजना बनाई और एक पिंजरे में पली हुई एक जीवित चिड़िया अपने हाथ में लेकर पण्डितजी से पूछा - यह चिड़िया मरी हुई है या जिन्दा ? पण्डितजी को परिस्थिति समझते देर नहीं लगी। उन्होंने विचार किया कि यदि मरी हुई कहते हैं कि तो बादशाह उस चिड़िया को वहीं पर दबाकर मार डालेंगे और यदि मरी हुई कहते हैं तो अभी उसे छोड़ देंगे और मुझे झूठा साबित कर देंगे। पण्डितजी ने सोच विचारकर कह दिया - हुजूर! यह चिड़िया मरी हुई है। बादशाह ने उसी समय अपने हाथ से चिड़िया छोड़ दी, चिड़िया उड़कर दूर जाकर बैठ गई।

बादशाह ने कहा - पण्डितजी! मैंने जो सुना था कि आप बड़े सत्यवादी हैं और अंहिसक हैं। आज आपकी सत्यता कहाँ चली गई ? जो साक्षात् जीवित चिड़िया को मरी बतलाकर आप झूठ बोल रहे हो। कविवर पण्डित बनारसीदासजी ने उत्तर दिया -हुजूर! यदि मैं जीवित कहता तो आप उसे तुरंत वहीं दबाकर मार डालते और इस हत्या में मुझे भी अनुमोदना का पाप लगता। यद्यपि अहिंसा और सत्य दोनों धर्म की रक्षा करना चाहिये किन्तु जब ऐसी परिस्थिति है तो दोनों में एक का नाश होगा ही, वहाँ अहिंसा की रक्षा करना हमारा धर्म है।

यह हिंसा पाप ही सबसे भयंकर है और अहिंसा ही धर्म का मूल है इसलिये एक प्राणी को बचाने के लिये मैंने जानबूझकर झूठ बोला है।

करनी का फल का शेष भाग

हाँ भाई! किस्मत में होगा तो जरूर दे देगा।

फिर किस्मत देती है या भगवान देता है

इन प्रश्नों को सुनकर राजा भी समझ नहीं पाया कि क्या उत्तर दें ?

इससे पता चलता है कि फल तो सबको अपनी स्वयं की करनी के अनुसार मिलता है क्योंकि यदि भगवान देता होता तो सभी को देता परंतु वस्तु स्थिति तो यह है कि कोई किसी को कुछ भी फल नहीं दे सकता। प्रत्येक जीव अपनी करनी का फल पाते हैं।

अब नहीं देंगे

दीदी! आप क्या कर रही हो ?

बस सुलभा पुराने कपड़े निकाल रही हूँ।

पुराने कपड़े क्यों निकाल रहीं हैं? धुलाई करवाना है क्या ?

अरे नहीं .... ये तो धुले हुये ही हैं। इनमें से कुछ कपड़े पुराने हो गये हैं, कुछ फट रहे हैं और कुछ छोटे हो गये हैं।

अच्छा तो आप इन कपड़ों का क्या करेंगी ?

अरे! हर चार-पाँच दिन में पुराने कपड़े लेने वाले एक भाई आते हैं और हम उनसे इन कपड़ों के बदले में हमें बर्तन ले लेंगे।

अच्छा! तो ये कुल कितने कपड़े होंगे?

ये लगभग 20-22 कपड़े हैं।

तो इन कपड़ों से 8-10 बर्तन तो मिल ही जायेंगे न.....।

अरे कहाँ? मुश्किल से 2 या 3 बर्तन। वो ही एक थाली और एक स्टील का छोटा टब।

बस 2-3 कपड़े। ये तो सही नहीं है।

सही नहीं तो हम क्या कर सकते हैं? वैसे भी घर में ये कपड़े कोई काम के नहीं।

वैसे आप बुरा न मानें तो एक बात कहूँ ....

हाँ हाँ कहो न। तुम्हारा क्या बुरा मानना।

मेरे हिसाब से ये सारे कपड़े किन्हीं गरीब व्यक्तियो को दे देना चाहिये। उनके लिये तो ये कपड़े नये कपड़ों से कम नहीं। कम से कम उनके काम तो आयेंगे।

क्या पता वे गरीब ही इन कपड़ों को बेच दें ...

तो क्या हुआ उनकी ही सहायता होगी। वैसे भी इन कपड़ों से जो बर्तन मिलते हैं वे सब बहुत सामान्य क्वालिटी के होते हैं। ये बर्तन कुछ दिन बाद खराब हो जायेंगे।

तो क्या हुआ ? हम कुछ दिन ही उपयोग कर लेंगे.....

अरे दीदी! आप ये बताईये कि आपके घर में बर्तन की कोई कमी है क्या ? मैंने देखा कि आपके ऊपर वाले कमरे में ढ़ेर सारे नये बर्तन रखे हुये हैं उनका तो आप उपयोग कर नहीं पातीं और फिर से नये बर्तन। मेरी मानो तो ये कपड़े अपने यहाँ काम करने वाले कर्मचारियों को अथवा गरीब लोगों को दे देना चाहिये।

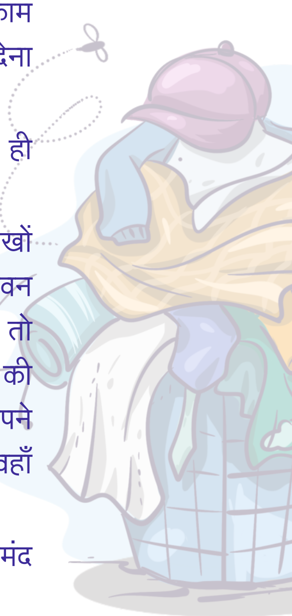

बात तो तेरी सही है। पर आजकल कोई गरीब है ही कहाँ ?

ये हमारी सोच है दीदी। आज भी हमारे देश में लाखों परिवार बिना घर, बिना कपड़े और ढंग के भोजन के बिना जीवन गुजार रहे हैं और फिर भी यदि कहीं कोई गरीब न मिले तो आजकल सरकार और कई संगठनों ने हर शहर में ''नेकी की दीवार'' के नाम से एक स्थान बनाया है जहाँ पर लोग अपने पुराने कपड़े रख जाते हैं और जरूरतमंद लोग अपने अनुसार वहाँ से कपड़े ले जाते हैं।

तुम सच कर रही हो। अबसे मैं सारे कपड़े जरूरतमंद लोगों को ही दूँगी।

वाह दीदी। ये हुई न बात।

प्यारी कविता

माँ छोटीसी पीछी दे दे मैं मुनिवर बन जाऊँगा
फिर जंगल के बीच बैठकर आतम ध्यान लगाऊँगा।
ये वादा करता हूँ माता, तुझको नहीं रुलाऊँगा।
रत्नत्रय के पथ पर चलकर, मुक्ति महल में जाऊँगा।।

भारत देश के विकास में जैनों का योगदान

चहकती चेतना

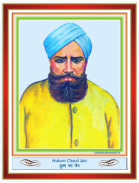

भारत के स्वतंत्रता संग्राम आंदोलन में सबसे पहले फांसी चढ़ने वाले लाला हुकुमचंद जैन थे। लाला हुकुमचंदजी झांसी की महारानी लक्ष्मीबाई को आर्थिक सहयोग करते थे।

महाराणा प्रताप को चित्तौड़गढ़ राज्य वापस दिलाने में दानवीर भामाशाह का बहुत बड़ा योगदान था। दानवीर भामाशाह जैन थे और इनके नाम से राजस्थान सरकार समाज में सहयोग करने वालों को भामाशाह की उपाधि से सम्मानित करती है।

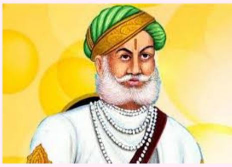

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान कार्यक्रम के जनक **डॉ. विक्रम साराभाई जैन** थे।

भारत में पहली कार की फैक्ट्री खोलने वाले **श्री बालचंद हीराचंद जैन** थे। इन्हें फादर ऑफ ट्रांसपोर्टेशन इन इंडिया कहा जाता है।

Seth Walchand Hirachand

भारत में पहली विमान (HAL) फैक्ट्री खोलने वाले भी महान व्यापारी **श्री बालचंद हीराचंद जैन थे**।

भारत में पहला शिपयार्ड बनाने वाले महान देशभक्त व्यापारी **श्री बालचंद हीराचंद जैन** थे। इनके द्वारा निर्मित भारतीय जहाज ने 5 अप्रेल 1919 को मुम्बई से लंदन तक अपनी पहली अंतर्राष्ट्रीय यात्रा की। श्री बालचंदजी इस यात्रा के लिये स्वयं जहाज पर थे। भारत के स्वतंत्र होने के बाद इस यात्रा के सम्मान में 5 अप्रेल को समुद्री दिवस घोषित किया गया।

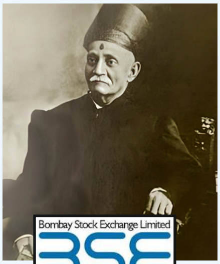

Bombay Stock Exchange Limited BSE The edge is efficiency

भारत के सबसे पहले स्टॉक एक्सचेंज बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज (BSE) की स्थापना करने वाले कॉटन किंग के नाम से विख्यात **श्री प्रेमचंद रायचंद जैन** थे। इन्होंने अपनी अंधी माँ के समय का ज्ञान कराने के लिये मुम्बई यूनिवर्सिटी में 280 फीट ऊंचा राजा बाई क्लॉक टॉवर का निर्माण कराया था।

भारत की सबसे बड़ी दवा कम्पनी सन फार्मास्यूटिकल्स के मालिक **श्री दिलीप भाई संघवी जैन** हैं।

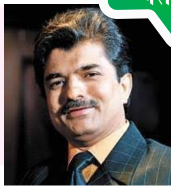

भारत के सबसे बड़े मीडिया समूह बेनेट कोलमेन एंड कंपनी की चेयरपर्सन और देश की अरबपति महिला **श्रीमति इन्दु जैन** हैं। टाइम्स ऑफ इण्डिया 28 लाख प्रतियों के साथ दुनिया में सबसे बड़ा अंग्रेजी अखबार है।

भारत की सबसे बड़ी रियल एस्टेट कंपनियों में से एक लोढ़ा ग्रुप के मालिक **श्री मंगल प्रभात लोढ़ा** हैं। ये वर्तमान में महाराष्ट्र सरकार में केबिनेट मंत्री हैं और बड़े समाज सेवी हैं।

भारत की सबसे बड़ी हीरा कंपनी ब्लू इंडिया कंपनी के मालिक डायमंड किंग **श्री रसेल जैन मेहता** हैं जो कि भारत के शीर्ष उद्योगपति अंबानी के समधी हैं।

भारत की सबसे बड़ी सूक्ष्म सिंचाई फर्म के मालिक **श्री भंवरलाल जैन** हैं।

भारत मे ंसर्वाधिक बिकने वाली गम कम्पनी फेविकॉल के मालिक **श्री मधुकर जैन पारेख** हैं।

भारत के सबसे बड़े सोना निर्यातक **श्री राजेश जैन मेहता** हैं।

भारत में सबसे कम जनसंख्या वाले जैन समाज का भारत देश की जीडीपी में मुख्य योगदान है।

जैन समाज की महिला शिक्षा दर भी भारत में 96 प्रतिशत है।

उत्तम
क्षमा धर्म

रचनाकार - डॉ. विराग शास्त्री, जबलपुर

क्षमा धर्म है सबसे प्यारा,
आतम का स्वभाव है न्यारा ।।
क्रोध विकारी भाव है,
उससे होते पाप हैं ।।
क्षमा जीव का गहना है,
मुनिराजों का कहना है ।।
क्रोध बढ़े तो शांत रहो,
अपने में विश्राम करो ।।

1

उत्तम
मार्दव धर्म

मान करे सबको हैरान,
अज्ञानी जीवों की शान ।
मान करे सब सत्यानाश,
जीव दुखी हो और निराश ।
मान कषाय का करना त्याग,
मैं पूरा हूँ हो विश्वास ।।
मार्दव भाव हृदय में धार,
दशधर्मों की जय जयकार ।।

2

उत्तम आर्जव धर्म

रचनाकार - डॉ. विराग शास्त्री, जबलपुर

3

आर्जव अर्थ सरलता जान,
सच्चे जैनी की पहचान ॥
मायाचारी कभी न करना,
प्रेम भाव से मिल-जुल रहना ॥
सरल भाव है शुद्धातम,
जानो बनना परमातम ॥
कपट भाव दुखदाई मान,
सरल भाव से हो सन्मान ॥
त्याग कपटता बनो महान,
पा जाओगे सुख की खान ॥

उत्तम शौच धर्म

4

पापाजी ओ पापाजी,
हमको भी बतलाना जी,
शौच धर्म क्या होता है ?
कैसे पाला जाता है ?
पापा- बेटेजी ओ बेटेजी,
शौच धर्म शुद्धि परिणाम,
इसमें नहीं लोभ का काम ।
लोभी व्यक्ति सदा दुखी,
संतोषी ही सदा सुखी ।
हो मुनिवर की भक्ति जी
सुनलो प्यारे बेटेजी,
नहीं कभी भी लोभ करो,
जो पाया संतुष्ट रहो ।
लोभ सदा ही बंध करे,
दुर्गति में भ्रमण करे ।
देख खजाना चेतन जी,
सुनलो प्यारे बेटेजी,
बच्चा- नहीं मांगू मैं भोग विलास,
चेतन वैभव मेरे पास ।
शौच धर्म मैं पालूंगा,
निज आतम को ध्याऊँगा
परमातम बन जाऊँ जी,
पापाजी ओ पापाजी ।

उत्तम सत्य धर्म

रचनाकार - डॉ. विराग शास्त्री, जबलपुर

5

हम नन्हें मुन्ने बच्चे हैं,
दांत हमारे कच्चे है ।
झूठ कभी ना बोलेंगे,
दिल न किसी का दुखायेंगे ।
सत्य वचन हितकारी हैं,
सबको आनंदकारी है ।
परम सत्य शुद्धातम मान,
बन जाना जल्दी भगवान ।।

उत्तम संयम धर्म

6

जिनवाणी जो कहती है, सुन लो जी ।
उत्तम संयम जीवन में पालो जी ।
कभी जीव हिंसा नहीं करना,
इंद्रिय भोग में मन न रमाना ।
जैनी बन कर धर्म निभाना जी ।
सदा छानकर पानी पीना,
भोजन शुद्ध सदा ही करना ।
उत्तम संयम सदा ही पालो जी ।
जिनवाणी माँ हमें जगाए,
सभी जीव भगवान बताये ।
मन में अपने करुणा धारो जी ।

उत्तम तप धर्म

7

मम्मी जी ओ मम्मी जी,
मेरी प्यारी मम्मी जी ।
जल्दी से बतलाना जी
मुझको भी समझाना जी ।
उत्तम तप क्या होता है ?
कैसे पाला जाता है ?
उत्तम का मतलब है क्या ?
भेद तपों के होते क्या ?

बेटा! सुनो ध्यान से बात,
उत्तम तप का रखना साथ ।
उत्तम आतम दर्शन है,
कहते सम्यक दर्शन हैं ।
तप से हो जीवन श्रृंगार,
तप से हो कर्मों की हार ।
अंतर-बाहर छह-छह भेद,
तप करने में करो ना खेद ।
जितनी शक्ति उतना तप,
सब पापों से रहना बच ।
तप से होता कर्म विनाश,
उत्तम तप दे मुक्ति प्रकाश ।

उत्तम त्याग धर्म

8

बच्चे बोले धरम-धरम,
धरम मार्ग में नहीं शरम ।
खोटी आदत का हो त्याग,
उत्तम त्याग से स्वयं विकास ।
पाप कषाय का होवे त्याग,
दुखमय होते भोग विलास ।
मुनिराजों का त्याग महान,
निज आतम प्रभुता की खान ।
शक्तिपूर्वक करना त्याग,
शीघ्र बसो सिद्धों के साथ ।।

उत्तम आकिंचन्य धर्म

रचनाकार
डॉ. विराग शास्त्री, जबलपुर

9

कुछ नहीं बाहर में मेरा है, सुनलो जी ।
आकिंचन्य धर्म बताता जी ।
मैं हूँ अनंत गुणों की खान,
हूँ स्वतंत्र निश्चल निष्काम ।
अपना गौरव गरिमा पा लो जी ।
नहीं बनूँ मैं पर का दास,
मैं पूरा हूँ हो विश्वास ।
सिद्ध समान स्वयं को ध्या लो जी ।

उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म

10

श्री मुनिवर से पूछें हम सब ब्रह्मचर्य क्या होता है ?
ब्रह्मचर्य से क्या मिलता है, कैसे पाला जाता है ?
श्री मुनिवर समझाते हैं, शील स्वयं भी ध्याते हैं ।
सदा शील गुण धारना, और कुशील भी त्यागना ।
गंदी बातें गंदे दोस्त, गंदी सोच भी छोड़ना ।
टीवी, पिक्चर खोटे भाव, कभी न नाता जोड़ना ।
अपना आतम ही है ब्रह्म, इसमें रमना कहे चरण ।
ब्रह्मचर्य शिवधाम करें, भवसागर का अंत करे ।।

मान किसका रहा

एक बार दशानन रावण नित्यलोकपुर से लंका जा रहा था। रास्ते में जाते समय अचानक कैलाश पर्वत पर उसका विमान रुक गया। उसने नीचे आकर देखा तो बालि मुनि तपस्या में लीन थे।उसने सोचा कि बालि मुनि ने पूर्व बैर के कारण मेरा विमान रोका है। रावण ने इसे अपना अपमान समझा और अपनी ऋद्धियों के बल पर कैलाश पर्वत को हिलाने लगा। पर्वत हिलाने के कारण पर्वत पर रहने वाले अनेक पक्षी मर गये तथा भरत चक्रवर्ती द्वारा बनाये गये अनेक जिनमंदिर भी हिलने लगे। यह देखकर बालि मुनि ने मंदिरों और जीवों की रक्षा के लिये अपने पैर के अंगूठे से पर्वत को दबाया जिससे रावण दबने लगा और रोने लगा। इसी कारण उसका रावण पड़ा। हताश होकर उसने बालि मुनि से क्षमा मांगकर जिनमंदिरों में भक्तिभाव से पूजा की।

इसी प्रकार सीता का अपहरण करने पर मंदोदरी एवं सभी मंत्रियों ने समझाया था कि सीता को वापस कर दो किन्तु रावण ने कहा यदि सीता को वापस करने जाऊँगा तो सभी मुझे कायर समझकर मुझे तुच्छ दृष्टि देखेंगे। मेरा मान सम्मान का क्या होगा ?

जान से हैं नृपगण सभी वीर मुझे संग्राम से,
यातें लड़ना है मुझे धुन बांधके अब राम से।
जीतकर दूंगा सिया प्यारी जो उनकी प्राण से,
यश होय मेरा विश्व में जीवित रहूँ सन्मान से।।

इस घमंड का फल हुआ -

इक लाख पूत सवा लख नाती।
उस रावण घर दिया न बाती।।

अर्थात् जिस रावण के एक लाख पुत्र और सवा लाख नाती थे उस रावण के वंश का कोई विश्व में जिन्दा नहीं बचा।

स्वतंत्रता के लिये सर्वस्व त्याग

अकबर की सेना ने महाराणा प्रताप को युद्ध में हराकर चित्तौड़गढ़ के राज्य पर अधिकार कर लिया था। महाराणा प्रताप अरावली पर्वत के वनों में अपने परिवार और कुछ राजपूत सैनिकों के साथ यहाँ -वहाँ भटकते रहते थे। उनके बच्चों तक को घास की बनी रोटियाँ भी दो - तीन दिनों तक नहीं मिल पाती थी। इन सब कष्टों को सहन करते हुये भी उन्हें बस एक ही चिन्ता थी कि शत्रुओं से देश पवित्र भूमि मुक्त कैसे कराई जाये ? उनके स्वयं के भोजन की व्यवस्था नहीं थी तो सैनिकों और युद्ध का खर्च कहाँ आता ? तब अंत में निराश होकर महाराणा ने अपने सरदारों से विदा ली और भीलों को समझाकर लौटा दिया और स्वयं अपनी मातृभूमि राजस्थान को छोड़ने के लिये तैयार हो गये।

जब महाराणा प्रताप अपने सरदारों को रोता हुआ छोड़कर महारानी और बच्चों के साथ जा रहे थे उसी समय महाराणा के मंत्री भामाशाह घोड़े पर बैठकर आते हुये दिखाई दिये। पास आने पर घोड़े से कूदकर वे महाराणा के पैरों पर गिरकर जोर-जोर से रोने लगे और बोले - आप हम लोगों को अनाथ करके कहाँ जा रहे हैं? महाराणा ने भामाशाह को उठाकर हृदय से लगाते हुये कहा - आज जब भाग्य ही हमारे साथ नहीं तो यहाँ रहने से क्या लाभ ?

भामाशाह ने हाथ जोड़कर कहा - महाराणा! हमारा एक निवेदन स्वीकार करें। महाराणा बोले - मैंने आपकी बात कब टाली है, कहिये क्या बात है? भामाशाह के साथ कई सेवक भी आये थे और उनके पास कई बोरियां थीं। भामाशाह के संकेत मिलने पर सभी सेवकों ने सारी बोरियों को उल्टा कर दिया। इनमें सोने के सिक्के भरे हुये थे और महाराणा के सामने सोने के सिक्कों का ढ़ेर लग गया। भामाशाह ने हाथ जोड़कर बहुत विनम्रता से कहा - यह सब धन आपका ही है। मैंने और मेरे पूर्वजों ने आपकी ही कृपा से यह धन एकत्रित किया है। इसे स्वीकार कर देश का मुक्त करायें। यह धन इतना है कि अगले 12 वर्षों तक 25000 सैनिकों का पूरा खर्च निकल जायेगा।

यह देखकर महाराणा प्रताप बोले - तुम धन्य हो भामाशाह! यह मातृभूमि तुम जैसे उदार और वीर पुरुषों के कारण ही मुक्त हो सकेगी। फिर महाराणा ने फिर से सेना इकट्ठी कर अकबर की सेना को हराकर अपना राज्य वापस ले लिया। युद्ध जीतकर महाराणा ने उदयपुर को अपनी राजधानी बनाया। यह भामाशाह जैन कुल के वीर पुत्र थे जिन्होंने विशाल धनराशि तो दी ही और हाथ में तलवार लेकर मुगल सैनिकों को अपनी वीरता से परास्त कर दिया। ऐसे थे हमारे पूर्वज।

जिनधर्म का श्रद्धान

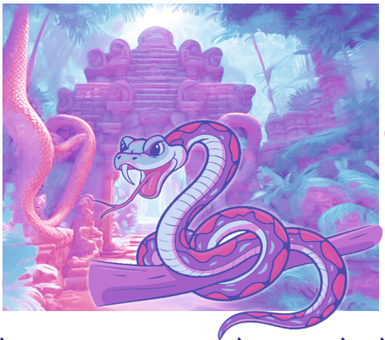

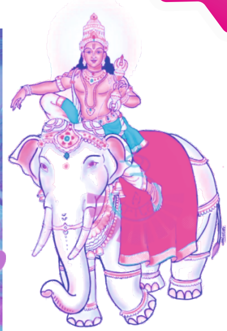

राजा श्रेणिक के पुत्र अभयकुमार सच्चे श्रावक थे। वे जिनधर्म का दृढ़ता से पालन करने वाले व्यक्ति थे। सच्चा श्रावक होने से स्वप्न में भी वीतरागी देव के अलावा अन्य देव को नमस्कार नहीं करते थे। एक बार स्वर्ग में सौधर्म इन्द्र अपनी सभा में अभयकुमार की बहुत प्रशंसा की। अभयकुमार की प्रशंसा सुनकर एक देव ने घमंड में कहा - यदि इन्द्रराज की आज्ञा हो तो मैं अभयकुमार की दृढ़ता भंग कर सकता हूँ। ये मध्यलोक के निवासी थोड़े से संकट में ही घबरा जाते हैं। सौधर्म इन्द्र ने कहा - यह काम इतना आसान नहीं है। फिर भी तुम्हें जाने की आज्ञा है।

उसी समय एक देव ने अपनी शक्ति से नागदेव का मंदिर बनाया और नगर में प्रसिद्धि करवा दी कि नगर के बाहर एक नागदेव का मंदिर जमीन से अपने आप प्रगट हुआ। जो कोई भी उसकी भक्ति पूजन करता है उसकी मनोकामना पूरी होती है।यह समाचार सुनकर राजगृही नगरी के लोग नागदेवता के दर्शन को चल पड़े। अभयकुमार को भी यह समाचार मिला पर वे नहीं गये।

कुछ समय बाद उन्होंने देखा कि राजसभा में बहुत सर्प भागे चले आ रहे हैं। यह सब देखकर राजगृही की जनता घबरा गई और उसे लगा कि अभयकुमार के द्वारा नागदेवता की भक्ति नहीं करने से नागदेवता क्रोधित हो गये हैं। लोगों ने अभयकुमार को समझाया कि नागदेवता को नमस्कार करें वरना पूरी जनता संकट में पड़ जायेगी। अभयकुमार ने कहा - मेरा मस्तक मात्र वीतरागी देव-शास्त्र-गुरु के चरणों में ही झुकेगा। देव शास्त्र गुरु के अतिरिक्त किसी के चरणों में झुकने की बात मुझे स्वीकार नहीं है। यदि इन सर्पों ने मुझे काट भी लिया तो एक बार मरण होगा परन्तु कुदेव को नमस्कार करने के पाप अनंत भव तक कष्ट भोगना पड़ेंगे। इतने में सर्प ने राजा और रानी ने काट लिया। परन्तु अभयकुमार ने नागदेवता को मस्तक नहीं झुकाया।

अभयकुमार की दृढ़ता देखकर देव अपने असली रूप में आ गया और अभयकुमार को नमस्कार कर देव ने क्षमा मांग और राजा रानी की बेहोशी समाप्त हो गई।

इस कहानी से हमें प्रेरणा लेना चाहिये कि हम कभी भी वीतरागी देव शास्त्र गुरु के अतिरिक्त किसी अन्य को नमस्कार नहीं करेंगे।

वें कौन थे

1. वे कौन थे जिनके पुत्र पण्डित दौलतराम जी ने छहढ़ाला जैसी अमर कृति की रचना की

उत्तर- श्री टोडरमलजी

2. वे कौन थे जो सीताजी को रथ में बिङ्गाकर जंगल छोड़ने गये थे ?

उत्तर- कृतान्तवक्र सेनापति।

3. वे कौन थे जो इस काल के अंतिम कामदेव थे ?

उत्तर- श्री जम्बू स्वामी।

4. वे कौन थे जो एक मुनिश्री को जलाकर बाद में प्रायश्चित लेकर स्वयं मुनिराज हो गये?

उत्तर- कपिल ब्राह्मण।

5. वे कौन थे मुनि निंदा के फल में मरकर बंदर बन गये थे ?

उत्तर- जीवक वैद्य।

6. वे कौन थे जिन्होंने देशभूषण - कुलभूषण मुनिराज पर उपसर्ग किया था ?

उत्तर- अग्निप्रभ देव।

7. वे कौन थे जिन्होंने अपनी आयु 1 माह शेष जानकर मुनि दीक्षा ले ली थी ?

उत्तर- महाबल राजा।

8. वे कौन थे जिन्हें अपने 60000 पुत्रों की मृत्यु का समाचार जानकर वैराग्य हो गया था ?

उत्तर- सगर चक्रवर्ती।

9. वे कौन थे जिन्हें झूठ बोलने के अपराध में तीन थाली गोबर खाने का दण्ड दिया गया था ?

उत्तर- श्रीभूति पुरोहित।

10. वे कौन थे जो नौकरों को डांटने पर प्रायश्चित में उस दिन भोजन नहीं करते थे ?

उत्तर- बैरिस्टर चंपतरायजी।

11. वे कौन थे जिनकी 32 पत्नियाँ थीं और उन्होंने मुनि दीक्षा ले ली थी ?

उत्तर- सुकुमाल कुमार।

12. वे कौन थे जिन्होंने अपने भाई पर पत्थर की शिला पटक दी थी ?

उत्तर- कमठ।

प्रेरक प्रसंग

महामना मदन मोहन मालवीय से एक विद्वान ने कहा कि मालवीयजी मैं बहुत शांत स्वभावी हूँ। चाहें तो आप मुझे सौ गालियाँ देकर देख लें मुझे गुस्सा नहीं आयेगा।

तो मालवीयजी आपके क्रोध की परीक्षा होने के पहले ही मेरी वाणी गंदी हो जायेगी। आपकी परीक्षा करने के लिये मैं अपनी वाणी गंदी क्यों करूँ ?

अपना परिचय

पण्डित टोडरमलजी जयपुर के बहुत बड़े विद्वान थे। एक बार एक सज्जन ने पण्डित टोडरमलजी का प्रवचन सुना और उनसे पूछा - महोदय आपके विचार अति सुन्दर हैं। कृपया अपना परिचय दीजिये। उन्होंने उत्तर देते हुये कहा - भाई मैं आत्मा हूँ। मैं अमूर्तिक प्रदेशों में रहता हूँ। वहाँ रहते हुये मुझे अनादि काल हो गया है और अनंत काल तक रहूँगा। मेरा जानने -देखने का व्यापार है। मेरे परिवार में ज्ञान,दर्शन, सुख, वीर्य आदि अनंत सदस्य हैं। पूछने वाले सज्जन ने कहा - मैं कुछ समझा नहीं। पण्डितजी बोले - इसे समझने के लिये वीतरागी संतों के द्वारा लिखित शास्त्रों का स्वाध्याय कीजिये, आप अपने आप समझ जायेंगे और ये मात्र मेरा ही नहीं आपका भी यही परिचय है।

न्याय

पुण्डरीकिणी नगरी के राजा जयद्रथ ने एक हंस मारकर उसका बच्चा पकड़ लिया था। उन्होंने अगले जन्म में सत्यंधर राजा के पुत्र जीवंधर कुमार के रूप में जन्म लिया। जीवंधर कुमार के जन्म लेते ही उनके पिता सत्यंधर कुमार को उनके मंत्री काष्ठांगार ने मार डाला और जीवंधर कुमार को 16 वर्ष तक अपनी माता से अलग रहना पड़ा। यह उनके कर्म का फल था।

आपके प्रश्न उत्तर जिनागम के

प्रश्न - क्या एकाशन में शाम को पानी पी सकते हैं ?

उत्तर - एकाशन में एक बार ही भोजन लेना चाहिये। जल लेना भी पेय आहार है। ऊनोदर में शाम को जल ले सकते हैं। वास्तव में ऊनोदर को एकाशन कहने लगे हैं जबकि ऊनोदर और एकाशन में अंतर है। ऊनोदर का अर्थ है भूख से कम खाना।

प्रश्न - तीर्थंकर भगवान वृक्ष की छाया के नीचे ही दीक्षा क्यों लेते हैं ?

उत्तर - वृक्ष की छाया थके हुये प्राणी को शांति और विश्राम प्रदान करती है अतः आत्मविश्रांति और शांति पाने के लिये प्रतीक स्वरूप वृक्ष की छाया में दीक्षा ग्रहण करते हैं।

प्रश्न - तीर्थंकरों के जन्माभिषेक के लिये देव कितनी देर में सुमेरू पर्वत पर पहुँच जाते हैं ?

उत्तर - देवों विक्रिया शक्ति वाले होते हैं अतः विचार आते ही सुमेरू पर्वत पर पहुँच जाते हैं।

प्रश्न - क्या बिना स्नान किये जिनमंदिर जा सकते हैं ?

उत्तर - भगवान का दर्शन-पूजन स्नान करके ही करना चाहिये। यदि कोई विशेष कारण हो तो जिनमंदिर के बाहर से दर्शन करना चाहिये।

प्रश्न - हम मांसाहार नहीं करते परन्तु सब्जियाँ-फल भी पेड़ पौधे पर होते हैं। इसमें भी हिंसा होती है ?

उत्तर - सब्जियों और फल के खाने में मांसाहार जैसा दोष नहीं है। परन्तु सब्जियों और फल में भी आलू प्याज आदि अभक्ष्य सब्जियों और फल का तो त्याग करना ही चाहिये।

प्रश्न - दीक्षा के बाद मुनिराज का नाम क्यों बदल दिया जाता है गृहस्थ अवस्था के नाम में क्या दोष है ?

उत्तर - गृहस्थी से सब प्रकार का संबंध टूट जाने से गृहस्थ अवस्था का नाम भी बदल दिया जाता है।

प्रश्न - तीर्थंकर गृहस्थ अवस्था में और मुनि अवस्था में आहार और निहार कैसे करते हैं ?

उत्तर - तीर्थंकर जीवों का निहार (मल-मूत्र) नहीं होता और गृहस्थ अवस्था में सामान्य मनुष्यों की तरह और मुनि अवस्था में मुनियों की तरह आहार करते हैं।

समाज श्रेष्ठी श्री अनंतराय सेठ का देह विलय

सम्पूर्ण जैन समाज के हित में अपना जीवन समर्पित करने वाले मुम्बई निवासी श्री अनंतराय ए. सेठ का 90 वर्ष की आयु में शांत परिणामों से देह विलय हो गया। श्री अनंतराय ए. सेठ ने अपने दीर्घ जीवन में पूज्य गुरूदेवश्री कानजी स्वामी प्राप्त जिनागम के रहस्यों के प्रचार प्रसार में अपनी उल्लेखनीय भूमिका का निर्वाह किया साथ ही दिगम्बर जैन तीर्थों का जीर्णोद्धार, साहित्य प्रकाशन, सोनगढ़ में विद्यालय की स्थापना, आचार्य कुन्दकुन्द की साधना भूमि पोन्नूर मलै में जिनमंदिर का निर्माण, श्रवणबेलगोला में धर्मशाला का निर्माण, आचार्य कुन्दकुन्द की समाधि भूमि कुन्द्राद्रि में 8 किमी का पक्के मार्ग का निर्माण आदि अनेक ऐतिहासिक कार्य किये। उन्होंने अपने पारिवारिक ट्रस्ट के माध्यम से अनेक लोकोपयोगी कार्य किये। उनसे प्राप्त धार्मिक संस्कारों के बल उनका पूरा परिवार जिनशासन की प्रभावना में संलग्न है।

चहकती चेतना के परम संरक्षक श्री अनंतराय के प्रति चहकती चेतना परिवार भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

बैंगलोर जिनमंदिर का स्वर्ण जयंती महोत्सव सम्पन्न

पूज्य गुरूदेवश्री कानजी स्वामी के सदुपदेश से बैंगलोर के वलेपेठ स्थित श्री महावीर स्वामी दिगम्बर जिनमंदिर की स्थापना के 50 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में श्री दिगम्बर जैन स्वाध्याय मंडल ट्रस्ट, बैंगलोर द्वारा 8 से 12 अप्रेल 2025 तक भव्य स्वर्ण जयंती महोत्सव संपन्न हुआ। श्री भभूतमलजी भण्डारी परिवार द्वारा संस्थापित यह जिनमंदिर दर्शनीय है।

देवलाली में 27वाँ बाल संस्कार शिविर सम्पन्न

देवलाली के कहान नगर में प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष 2 मई से 7 मई तक बाल संस्कार शिविर उत्साहपूर्वक सम्पन्न हुआ। इस शिविर में आसपास के नगरों के लगभग 280 बच्चों ने सहभागिता की। ज्ञातव्य है कि इस शिविर के संयोजक के रूप मे विगत 27 वर्षों से श्री वीनूभाई शाह मुम्बई और श्री उल्लासभाई जोबालिया का विशेष सहयोग और समर्पण प्राप्त हो रहा है।

जिनदेशना सामूहिक बाल संस्कार शिविर का आयोजन सम्पन्न

जिनदेशना द्वारा तत्वप्रचार की गतिविधियों के अन्तर्गत प्रतिवर्ष की तरह इस वर्ष भी मध्यप्रदेश के 30 नगरों में एक साथ जिनदेशना सामूहिक बाल संस्कार शिविर का आयोजन किया गया। दिनांक 13 मई से 18 मई तक इस शिविर का आयोजन श्रेष्ठी श्री बिमलकुमार जैन नीरु केमिकल्स परिवार, दिल्ली की चतुर्थ पुण्य स्मृति में श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन तीर्थ सुरक्षा ट्रस्ट मुम्बई, श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, विलेपारला मुम्बई, श्री दिगम्बर जैन कुन्दकुन्द परमागम ट्रस्ट, साधना नगर, इंदौर और श्री कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान उज्जैन के तत्वावधान में मध्यप्रदेश के 30 नगरों के साथ राजस्थान और महाराष्ट्र के 1-1 नगर में आयोजित किया गया। इस वर्ष श्री हिम्मतभाई शाह मुम्बई का भी विशेष सहयोग प्राप्त हुआ। साथ ही श्री श्री मणिभाई कारिया मुम्बई, श्री श्रेणिक विनय लुहाड़िया मुम्बई, श्रीमति अचरज देवी निहालचंदजी जैन जयपुर का भी विशेष सहयोग प्राप्त हुआ। इस शिविर में देश के 70 युवा विद्वानों ने विद्वान के रूप में अपनी सेवायें दीं और लगभग 4 हजार से अधिक बच्चों और साधर्मियों ने शिविर में तत्वज्ञान का लाभ प्राप्त किया।

शिविर के निर्देशक के रूप में विराग शास्त्री, सह निर्देशक श्री आशीषजी शास्त्री टीकमगढ़, संयोजक श्री श्रेयांसजी शास्त्री अभाना श्री अमितजी अरिहंत भोपाल, श्री भूपेन्द्रजी शास्त्री विदिशा, श्री अनिकेतजी शास्त्री भिण्ड ने अपनी सेवायें प्रदान कीं।

जिनदेशना कंठपाठ महोत्सव सम्पन्न

ग्रीष्मकालीन अवकाश के दौरान बच्चों को जिनागम से जोड़ने के उद्देश्य से जिनदेशना कंठ पाठ महोत्सव का आयोजन किया गया। इसके अंतर्गत प्राकृत - संस्कृत की मूल गाथायें, स्तोत्र, कलश, सूत्र आदि याद करना थे और उन्हें वीडियो कॉल के माध्यम से निर्धारित समय में सुनाना था। इसमें लगभग 150 बच्चों ने सहभागिता की और पण्डित आतम शास्त्री खड़ैरी और पण्डित प्रियम शास्त्री मलहरा के माध्यम से यह कार्यक्रम संपन्न हुआ। सभी प्रतिभागियों को श्री दिलीपभाई वेलजी भाई शाह मुम्बई, श्री सुमति सेठिया दिल्ली, श्री नीलेश विनायके सेलू, श्री राजीव जैन आगरा आदि महानुभावों के सहयोग से पुरस्कार प्रेषित किये गये। कार्यक्रम का निर्देशन श्री विराग शास्त्री द्वारा किया गया।

पुणे में जैन हॉस्टल का शुभारंभ

जैन समाज के पुणे में अध्ययन करने वाले और जॉब करने युवाओं के लिये पुणे के कोथरूड में सर्व सुविधायुक्त जैन हॉस्टल का नवीन शुभारंभ दिनांक 15 जून 2025 को किया गया। श्री सुनील श्रुतेश गांधी के विशेष प्रयासों से परमागम प्रभावना ट्रस्ट और सन्मति सेवा प्रतिष्ठान के द्वारा निर्मित इस हॉस्टल का शुभारंभ प्रसिद्ध उद्योगपति श्री शोभा रसिकलाल धारीवाल के करकमलों से हुआ। इस अवसर पर प्रातः श्री सर्वज्ञ देव विधान का आयोजन और स्वाध्याय सभा के बाद उद्घाटन सभा का आयोजन हुआ। यह कार्यक्रम डॉ. विराग शास्त्री जबलपुर के निर्देशन और पण्डित नगेश जैन के संयोजन में संपन्न हुआ।

चैतन्यधाम में 57वाँ आध्यात्मिक शिक्षण शिविर सानंद सम्पन्न

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट जयपुर द्वारा प्रतिवर्ष होने वाले आध्यात्मिक शिक्षण प्रशिक्षण शिविरों की श्रृंखला का 57वाँ शिविर अहमदाबाद के पास स्थित प्रसिद्ध तीर्थ चैतन्यधाम में दिनांक 18 मई से 4 जून तक संपन्न हुआ। जिसमें पचास से अधिक विद्वानों द्वारा जिनागम के सिद्धांतों पर गंभीर चर्चा प्रस्तुत की गई।

आपका साथ हमारा प्रयास - हो जिनधर्म का शंखनाद

आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन जबलपुर

आपकी यह संस्था विगत लगभग 17 वर्षों से बाल-युवा वर्ग में जिनधर्म के संस्कार प्रवाहित करने का प्रयास कर रही है। इस क्रम में तत्वप्रचार की नवीनतम विद्या का प्रयोग करते हुये जिनधर्म की कविताओं, कहानियों, गीतों के वीडियों का निर्माण किया गया। साथ ही रोचक धार्मिक गेम, कविताओं-कहानियों की चित्र सहित पुस्तकों का प्रकाशन किया गया। बाल वर्ग में निरंतर धर्म की जाकिरियाँ प्रवाहित करने हेतु 2006 में चहकती चेतना पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है। इस पत्रिका को पाठकों एवं अनेक विद्वानों का भरपूर प्यार और विश्वास प्राप्त हुआ है।

संस्था के पास जिनधर्म के प्रचार की अनेक योजनायें है आपका सहयोग मिलता रहेगा तो हम आगे भी समाज के लिये यह कार्य निरंतर करते रहेंगे। आशा है आपका सहयोग और विश्वास प्राप्त होगा। आप निम्न प्रकार से हमारा सहयोग कर सकते हैं।

शिरोमणि परम संरक्षक : 1 लाख रुपये । **परम संरक्षक** : 51 हजार रुपये

संरक्षक : 31 हजार रुपये । **परम सहायक** : 21 हजार रुपये । **सहायक** : 11 हजार रुपये ।

सहायक सदस्य : 5 हजार रुपये । **सदस्य** : 1000 रुपये ।

प्रत्येक सहयोगी को (सदस्य को छोड़कर) चहकती चेतना पत्रिका का आजीवन सदस्य बनाया जायेगा। संस्था द्वारा तैयार होने वाली समस्त सीडी और प्रकाशन आपको निःशुल्क भेजा जायेगा। आप अपनी सहयोग राशि आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन रजि. जबलपुर के नाम से चैक अथवा ड्राफ्ट के माध्यम से बनाकर भेजें।

कबूतरों की बीट जानलेवा

सांस की बीमारी से लेकर ट्रांसप्लांट तक का खतरा

अनेक शहरों में कबूतरों को दाना खिलाने की शौक देखा जाता है। मुम्बई, चंडीगढ़ जैसे शहरों में हजारों कबूतरों के झुंड के पास ही अनाज की दुकान ही होती है। लोग इन दुकानों से दाना खरीदकर कबूतरों को खिलाते हैं। कई साधुओं और पंडों ने कबूतरों को दाना खिलाने, मछलियों को आटा, गाय और कुत्ते को रोटी खिलाने को महापुण्य बता दिया है। करुणा से किसी को भोजन कराना अच्छी बात है पर इन सबके बीच सावधानी भी आवश्यक है।

कई घरों की छतों और बालकनी में कबूतरों का आना आम बात है। पर क्या आप जानते हैं कि कबूतरों की बीट मल हमारे स्वास्थ्य की गंभीर खतरा बन सकती है।

नवम्बर 2023 में एक 53 वर्षीय महिला को कबूतरों की सूखी बीट का पाउडर सांस से अंदर चले जाने के कारण फेफड़ों की गंभीर बीमारी हाइपरसेंसिटिविटी न्यूमोनाइटिस हो गई। इस बीमारी इतनी बढ़ी की उसे लंग्स ट्रांसप्लांट कराने पड़े। कुछ वर्ष पहले मुम्बई जैन साधर्मी अपनी बालकनी में कबूतरों की सूखी बीट साफ कर रहे थे तो उस समय बीट का पाउडर सांस से लंग्स में चला गया जिससे वे बीमार हो गया और बहुत परेशानियों के बाद उनका देह विलय हो गया। अमेरिका की सेंटर्स फॉर डिजीज कंट्रोल एंड प्रिवंशन और विश्व स्वास्थ्य संगठन भी पक्षियों से फैलने वाली इन बीमारियों को गंभीर खतरा मानते हैं।

कबूतरों की बीट इतनी खतरनाक क्यों - दिखने में सामान्य लगने वाली कबूतर की बीट में कई खतरनाक बैक्टीरिया और फंगस हो सकते हैं। इनमें क्रिप्टोकोकस, हिस्टोप्लास्मोसिस, क्लैमाइडिया सिटासी जैसे जीव शामिल हैं। जब ये सूखी बीट हवा में उड़ती है तो इसके साथ मौजूद छोटे-छोटे फंगल स्पोर्स सांस के जरिये हमारे शरीर में जा सकते हैं जिससे सांस लेने में दिक्कत हो सकती है।

कबूतरों की बीट से कौनसी बीमारी होने की संभावना - बीट जब सांस के माध्यम से हमारे शरीर में पहुँचती है तो फेफड़ों में सूजन, दिमाग की झिल्ली में सूजन या सिटाकोसिस नाम की हो सकती है जिसमें तेज बुखार, सिरदर्द और सांस लेने में परेशानी होती है।

इस बीट से सबसे ज्यादा खतरा उन लोगों को है जिनकी इम्यूनिटी कमजोर है। इनमें बुजुर्ग, छोटे बच्चे, अस्थमा या फेफड़ों की बीमारी से पीड़ित लोग शामिल हैं।

उपाय - अगर आप चाहते हैं कि कबूतर आपके छत या बालकनी में घोंसला न बनायें तो आपको अपना छत और बालकनी में सफाई रखनी होगी क्योंकि कबूतर आमतौर पर नमी या गंदगी वाली जगह पसंद करते हैं।

सावधानी - यदि आपके घर के किसी हिस्से में कबूतर की बीट जमा हो गई है तो उसे साफ करने के लिये उस पर पानी डाल दें जिससे उसका पाउडर उड़ने की संभावना नहीं रहेगी। बीट साफ करते समय हाथ में दस्ताने पहनें और नाक और मुंह पर कपड़ा बांधें। सफाई के बाद अपने हाथों को अच्छी तरह धोयें।

अंधी दौलत

एक तैमूर लंग ने दिल्ली पर आक्रमण करके उसकी जीत की खुशी में बड़ी महफिल कराई और उसमें नृत्य करने के लिये एक नर्तकी बुलाई। वह नर्तकी अंधी थी और उसका नाम दौलत था। तैमूर ने उस नर्तकी से पूछा - तेरा नाम दौलत है परन्तु तू अंधी क्यों है ? यह सुनकर वह नर्तकी बोली - दौलत तो अंधी ही होती है। अगर दौलत अंधी न होती तो तैमूर लंग (लंगड़े) के पास कैसे आती ? यह सुनकर तैमूर लंग बहुत लज्जित हुआ।

पर्यावरण सुरक्षित

बनाये रखने में आप भी अपना योगदान दें !

विश्व की बढ़ती जनसंख्या के साथ पर्यावरण सम्बन्धी समस्यायें भी बढ़तीं जा रहीं हैं। पर्यावरण को सुरक्षित रखने का काम मात्र सरकार, एनजीओ या किसी संस्था का नहीं बल्कि हम भी पर्यावरण की सुरक्षा में अपना योगदान दे सकते हैं। आप कह सकते हैं कि हमने कोई पेड़ नहीं काटा, प्लास्टिक की थैलियों की जगह कपड़े का थैला यूज करते हैं, बिजली बचाते हैं आदि। ये सभी आदतें अच्छी हैं पर हम कई अन्य बातों पर विशेष ध्यान देकर अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

एडहेसिव टेप - बच्चों के स्कूल प्रोजेक्ट हों, कोई गिफ्ट पैक करना हो या कोई सामान पैक करना हो तो एडहेसिव टेप का प्रयोग किया जाता है। ये टेप पर्यावरण के लिये बहुत नुकसानदायक है। यह टेप पॉलीप्रोपाइलीन या पॉलीविनाइल क्लोराइड से बनते हैं। चिपकाने के लिये इसमें एक्रिलिक या रबर बेस्ड ग्लू लगाया जाता है। यह सभी चीजें नॉन बायाडिग्रेबल हैं यानि ये स्वयं नष्ट नहीं होतीं। एक भारतीय परिवार औसतन 100 मीटर तक टेप यूज करता है। इस टेप से हर साल 2 लाख टन टेप प्लास्टिक कचरा बन जाता है। इसका उपाय यह है कि बहुत जरूरी होने पर इस टेप का प्रयोग करें। आप कागज वाला टेप भी उपयोग में ले सकते हैं। ऑनलाईन माध्यम से ईको फ्रेंडली पैंकिग सामान मंगवा सकते हैं।

टूथपेस्ट - जैन चरणानुयोग के अनुसार पेस्ट गीला पदार्थ होने से अभक्ष्य है इसलिये पेस्ट का उपयोग न करके मंजन का प्रयोग करना चाहिये। टूथपेस्ट की ट्यूब प्लास्टिक से बनती है जो कि 500 साल नष्ट नहीं होती। डाउन टू अर्थ की रिपोर्ट के अनुसार भारत में प्रतिवर्ष 100 करोड़ टूथपेस्ट का प्रयोग होता है। एक भारतीय प्रतिमाह 60 से 100 ग्राम तक पेस्ट प्रयोग करता है।

क्यों घातक है यह पेस्ट

ट्राइक्लोसन - यह एक एंटीबैक्टेरियल और एंटीफंगल केमिकल है। यह पानी में लम्बे समय तक बना रहता है। यह पानी में रहने वाले जीवों के लिये जहरीला है।

माइक्रोप्लास्टिक - कुछ टूथपेस्ट में माइक्रोप्लास्टिक होते हैं जो कि हमारे स्वास्थ्य के लिये बहुत हानिकारक है। तालाब या समुद्र में मिलने पर मछलियों और जल में रहने वाले जीवों के लिये यह जहर का काम करता है।

सोडियम लॉरिल सल्फेट - ये टूथपेस्ट में फोम बनाता है जो कि पेट में पहुँचने पर बहुत घातक होता है।

कपड़े धोने के साबुन और पाउडर - हर घर में कपड़े धोने के लिये साबुन या सर्फ का प्रयोग किया जाना सामान्य बात है। पर ये प्रकृति का बहुत खतरनाक नुकसान पहुँचा रहे हैं।

एक कपड़े धोने में 7 लाख माइक्रोप्लास्टिक निकलते हैं। साथ साबुन का पानी नालियों से होता हुआ नदियों और तालाबों में मिलता है। इस पानी में मौजूद फास्फेट से जलीय जीवों को नुकसान पहुँचता है। इससे बचा तो नहीं जा सकता परन्तु इको फ्रेंडली प्रोडक्ट्स का प्रयोग कर सकते हैं और अनावश्यक साबुन और सर्फ के प्रयोग से बचना भी एक सरल उपाय है।

सैनिटरी पेड - मासिक के दौरान सैनिटरी पेड का प्रयोग करना प्रत्येक महिला के लिये आवश्यक है परन्तु इसके दूसरे कई दुष्प्रभाव भी देखे जा रहे हैं। आपको जानकर आश्चर्य होगा कि सैनिटरी पेड में प्रयोग की जाने वाली सामग्री नॉन बायोडिग्रेडेबल होती हैं यानि इनका 90 प्रतिशत हिस्सा सैकड़ों सालों तक नष्ट नहीं होता।

उपाय - सैनिटरी पेड को उपयोग के बाद पूरी तरह से पैक करके अलग से फेकें। वर्तमान जीवन शैली में इनका उपयोग बंद करना संभव नहीं है फिर भी हम जितना बच सकें और सही उपयोग करें यही पर्यावरण सुरक्षा में छोटा योगदान अवश्य होगा।

चिन्ता करे बलाय

पण्डित श्री बनारसीदासजी ने जितने बार भी व्यापार किया, उतने ही बार उन्हें घाटा लगा इसलिये उनका असफल व्यापारी कहा जाता था। एक वे अपने रिश्तेदार और दूसरे व्यापारियों के साथ बहुत धन लेकर व्यापार करने दूसरे नगर जा रहे थे। रास्ते में उनका सारा धन चोरों ने चुरा लिया। यह देखकर उनके साथी बहुत दुखी हुये और उन्हें समझाने लगे। तब पण्डितजी बोले -

आये थे कुछ लाये नहीं, जावत नहीं ले जाय।
बिच आयो बिच ही नश्यो, चिन्ता करै बलाय।।

सच कहने का साहस और सलीका

राज एक्सप्रेस

भक्ति संगीत कार्यक्रम उपरांत विराग शास्त्री द्वारा बच्चों को दिया गया उद्बोधन

जीवन में ज्ञानाभ्यास जरूरी, ज्ञानाभ्यास से ही सभी कार्य संपन्न होते हैं : शास्त्री

जिन देशना प्रथम जैनत्व बाल युवा आध्यात्मिक संस्कार शिविर का हुआ समापन

● विदिशा / राज न्यूज नेटवर्क

श्री शीतलनाथ दिगम्बर जैन बड़ा मंदिर किले अंदर में जिन देशना प्रथम जैनत्व बाल युवा आध्यात्मिक संस्कार शिविर का समापन हुआ। प्रवक्ता शोभित जैन ने बताया कि शिविर के अंतिम दिन परीक्षा उपरांत सायंकालीन हमारे मुख्य अतिथि जिन देशना समूह के संचालक विराग शास्त्री जबलपुर के तत्वावधान में शिविर का समापन समारोह मनाया गया।

शाम को भक्ति संगीत के कार्यक्रम उपरांत विराग शास्त्री द्वारा बच्चों को उद्बोधन दिया गया। जिसमें उन्होंने बताया कि पहले के समय मे शिविर पूरे देश के कोने कोने में संचालित किया जाते थे। लेकिन धर्म के अभाव और लोगों की व्यस्तता के कारण ... इनका कम होना शुरु ... विराग शास्त्री द्वारा ब... पिछले तीन साल से ... दोबारा चालू किय... टेक्नोलॉजी के माध्... जगह जगह शिवि... गये। इस साल 3... शिविर लगा और ...

...बढ़ता जाएगा, इसका संकल्प भी ...ओं को दिलाया। ...

जैनत्व संस्कार बल्कि सामाजिक और दैनिक संस्कार भी सिखाये गये। प्रवक्ता शोभित जैन ने बताया ... के पश्चात ...

की परीक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले सभी होनहार बच्चों को परीक्षा परिणाम आया और सभी काक्षाओं में कक्षा 1 में प्रथम अक्षांश जैन, द्वितीय अन्वी जैन, तृतीय पूर्विका जैन आयी उसी प्रकार, कक्षा 2 में प्रथम अनुभवी बड़कुल, द्वितीय आरुष जैन, तृतीया सहजता जैन आये। कक्षा 3 में प्रथम इच्छा जैन, द्वितीय रितिका जैन, तृतीय निमित्त जैन। कक्षा 4 में प्रथम नीलेश जैन, द्वितीय मणि जैन, तृतीय जिनंदा जैन आयी। इन सभी को मंचासीन विराग शास्त्री, निखिल शास्त्री, मलुकचंद जैन खेरुआ, पंडित शिखरचंद जैन, अमित भैया द्वारा प्रमाण पत्र व पुरस्कार दिए गये।

बाकी समस्त बच्चों एवं युवाओं को प्रोत्साहन हेतु प्रमाण पत्र एवं पुरस्कार का भी वितरण किया गया। इसके पश्चात मुख्य अतिथियों द्वारा उदबोधन दिया गया। वहीं शिविर की आयोजक अखिल भारतीय महिला फेडरेशन की तरफ से सुधा चौधरी द्वारा समस्त विद्वानों का आभार प्रकट किया गया। मीना राजेन्द्र कुमार जैन द्वारा सभी युवा एवं नए शास्त्रीयों का प्रशस्ति पत्र देकर सम्मान किया गया। इसके पश्चात शिविर के संचालक समिति के सदस्यों का स्वागत किया गया। बड़ा जैन मंदिर ट्रस्ट के अध्यक्ष मलुकचंद जैन, रवि पटेल, चक्रवर्ती जैन एड, डॉ मक्खन लाल जैन, राजकुमार प्रिंस, राकेश मोदी और संजय अलंकार आदि द्वारा सभी का आभार व्यक्त किया गया।

शिविर में 150 से अधिक बाल एवं युवाओं ने दी परीक्षा

विदिशा,(निप्र)। जिन देशना प्रथम जैनत्व बाल युवा शिक्षण शिविर के 7वे व अंतिम दिन श्री शीतलनाथ दिगम्बर जैन बड़ा मंदिर किले अंदर में आज बच्चों एवं युवाओं में शिविर का उत्साह देखने को मिला। आज भगवान के अभिषेक प्रक्षाल पूजन आदि के पश्चात सभी ने परीक्षा दी। जिसमे 150 से अधिक बाल व युवाओं ने अपनी अपनी कक्षाओं के विषय अनुरूप परीक्षा दी, जिसमे बाल बोध1,2,3 व छः ढाला पर परीक्षा समपन्न हुई। 3 साल से 6 साल तक के बच्चों ने मौखिक परीक्षा दी वही 7 साल से अधिक उम्र के बाल, युवा व वरिष्ठ जनों ने लिखित परीक्षा दी। प्रवक्ता शोभित जैन ने बताया कि सभी प्रश्नपत्र 50 अंकों के थे। सायंकालीन शिविर समापन समारोह में जिन देशना समूह के संचालक विराग शास्त्री जबलपुर का विदिशा मुख्य अति... के रूप में आगमन हुआ। उन्होंने अपने उदबोधन में ...जिन देशना समूह पूरे भारत मे यह शि... ...विदिशा का प्रथम शिविर स...

बताया कि ऐसे शिविर सभी जगह हर साल लग... चाहिए। विदिशा तो पहले से ही विद्वानों की नग... कहलाती है। इसे मिनी सोनगढ़ भी कहते है। शिविर... निखिल शास्त्री द्वारा संगीतमय आध्यात्मिक ... पौराणिक कथाओं का डिजिटल प्रारूप सभी को बहु... पसंद आया। और आगे भी ऐसे शिविर लगे इसके लि... समाजजन ने उनका स्वागत किया। तत्पश्चात शिविर... सभी बच्चों को पुरस्कार वितरण किये गये।

दैनिक भास्कर रायसेन 17-05-2025

धर्म • जिन देशना बाल संस्कार शिक्षण शिविर में पुण्य और पाप की विस्तार से व्याख्या

विद्वानों के वचन हमें सत्य की राह पर चलने के लिए करते हैं प्रेरित : शास्त्री

गुणी जनों और महापुरुषों के वचनों को हमेशा आत्मसात करना चाहिए

भास्कर संवाददाता | सिलवानी

ग्रीष्मकालीन जिन देशना बाल संस्कार शिक्षण शिविर नगर के तारण तरण जैन चैत्यालय में आयोजित किया जा रहा है। शिविर में 100 से अधिक शिविरार्थी सहभागिता कर अपने धर्म ज्ञान में वृद्धि कर रहे हैं और धर्म की बारीकियां समझ रहे हैं। शिविर में पंडित अभिनय शास्त्री और पंडित पीयूष शास्त्री द्वारा अलग-अलग कक्षाओं का संचालन किया जा रहा है। इस शिविर का आयोजन पंडित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट जयपुर द्वारा किया जा रहा है।

विद्वानों ने चतुर्थ दिवस शिविरार्थियों को बताया कि गुणी जनों के वचनों को कभी भी अनावश्यक नहीं समझा जाना चाहिए। गुणी जनों और महापुरुषों के वचनों को हमेशा आत्मसात करना चाहिए। उनके द्वारा बोले गए वचन जीवन में ऊर्जा का संचार करते हैं और सत्य की राह पर चलने को प्रेरित करते हैं। उन्होंने पुण्य और पाप की व्याख्या करते हुए बताया कि पुण्य और ... एक ही सिक्के के दो ... पुण्य करने से ... सात्विक ...

जिन देशना बाल संस्कार शिक्षण शिविर में ...

प्रिय वचन व्यक्ति के संस्कारित होने का प्रमाण

पाप करने से व्यक्ति हेय हो जाता है और सभी तरफ से तिरस्कृत होता है। किया गया पाप अवश्य ही भोगना पड़ता है। ... संस्कार ...

सुबह और ...

शिविर में सुबह ... भी ...

जिनदेशना जैनत्व बाल संस्कार शिक्षण शिविर शुरू

भास्कर संवाददाता | दमोह

जिन देशना जैनत्व बाल संस्कार शिक्षण शिविर का शुभारंभ साइनिंग स्टार स्कूल में हुआ। ग्रीष्मकालीन 7 दिवसीय आवासीय शिविर बच्चों को जैन धर्म के गहरे संस्कारों, नियमों और जीवन मूल्यों से जोड़ने की एक अनूठी पहल है। प्रतिदिन शिविर का शुभारंभ जिनेंद्र भगवान की पूजा से होता है। इसके बाद अलग-अलग स्तरों पर शास्त्री विद्वानों द्वारा शिक्ष... कक्षाएं संचालित की जा ... दिनचर्या में सामूहिक क... कविताएं, खेल ... सांस्कृतिक कार्य... बच्चों में ...

रचनात्मकता ... शिविर ... पर ...

समापन

शिविर में जैनत्व संस्कार सहित सामाजिक और दैनिक संस्कार भी सिखाये गये

जिन देशना प्रथम जैनत्व बाल युवा आध्यात्मिक संस्कार शिविर का समापन किया गया

आचरण संवाददाता

विदिशा। जिन देशना प्रथम जैनत्व बाल युवा आध्यात्मिक संस्कार शिविर का समापन श्री शीतलनाथ दिगम्बर जैन बड़ा मंदिर किले अंदर में समपन्न हुआ। प्रवक्ता शोभित जैन ने बताया कि शिविर के अंतिम ... उपरांत सायंकालीन ... देशना ...

के कोने कोने में संचालित किया जाते थे। लेकिन धर्म के अभाव लोगों की व्यस्तता के कारण ... होना शुरू हो ...

शिविर लगा और अब यह आगे बढ़ता जाएगा इसका संकल्प भी लिया और युवाओं को दिलाया। उन्होंने बताया कि अगर बच्चों से चॉकलेट छीन ले, ...छीन ले, तो वह थोड़ी देर ... लेकिन ...

केवल जैनत्व संस्कार बल्कि सामाजिक और दैनिक संस्कार भी सिखाये गये। प्रवक्ता शोभित जैन ने बताया कि उनके उद्बोधन के पश्चात समापन समारोह चिरंतन बड़कुल द्वारा संचालित किया गया। जिसमें शिविरार्थियों के लिए गर्व का क्षण आया जब प्रथम आध्यात्मिक जैनत्व बाल युवा शिक्षण शिविर की परीक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले सभी होनहार बच्चों को परीक्षा परिणाम आया और सभी काक्षाओं में कक्षा 1 में प्रथम अक्षांश जैन, द्वितीय अन्वी जैन, तृतीय पूर्विका जैन आयी उसी प्रकार, कक्षा 2 में प्रथम अनुभवी जैन, तृतीय ... आरुष जैन, तृतीया ...

प्रथम ... जैन, तृ... प्रथम ... मणि ... जैन अ... विराग ..., मलुक... शिखर... प्रमाण ... गये। बा... युवाओं ... पत्र ए... किया ... अतिथि... गया। व... अखिल... की तर... द्वारा अ...

ग्रीष्मकालीन जिन देशना शिक्षण शिविर में आज से आयोजित होंगे प्रश्न मंच

सिलवानी (आरएनएन)। तारण तरण दिगंबर जैन समाज की बैठक रविवार की रात्रि को जैन चैत्यालय में समाज के वरिष्ठ संरक्षक सवाई सेठ ऋषभ कुमार जैन की अध्यक्षता तथा तारण तरण दिगंबर जैन महासमिति के अध्यक्ष सवाई सेठ संजय समैया की उपस्थिति में ...की गई। बैठक में बड़ी संख्या में समाजजन ... मंगलवार से प्रारंभ होने वाले ग्रीष्म ... को लेकर चर्चा की ...

जिन देशना शिक्षण शिविर में एकाग्रता के साथ विद्वानों के द्वारा बताई जा रही ज्ञानवर्धक बातों को सुनना तथा उसे ग्रहण करना भी है। शिविर का शुभारंभ मंगलवार को प्रात 9 बजे चैत्यालय में किया जाएगा। समकित शास्त्री ने बताया कि शिविर में पंडित अभिनय शास्त्री जबलपुर, पीयूष शास्त्री बेगमगंज के द्वारा शिविरार्थियों को धर्म का मर्म समझाया जाकर जैन धर्म के मूल सिद्धांतों, सदाचार, शिष्टाचार, अनुशासन तथा आधुनिक जीवन से जुड़ी व्यवहारिक जानकारी से अवगत कराया जाएगा। शिविर ...00 से अधिक बालक बालिकाएं सहभागिता कर ...में वृद्धि करेंगे। कार्यक्रम के तहत ... प्रश्नमंच, प्रवचन, ... क्लास, ...

जिन देशना आध्यात्मिक बाल युवा शिक्षण शिविर

भगवान महावीर स्वामी का प्रथम संदेश है सभी आत्माएं बराबर है कोई छोटा बड़ा नहीं है - निखिल शास्त्री

अटल स्तंभ ब्यूरो चीफ राजीव जैन सैनानी

सिरोंज। श्री शीतलनाथ दिगंबर जैन बड़ा मंदिर विदिशा में चल रहे जिन देशना आध्यात्मिक बाल युवा शिक्षण शिविर के 6वे दिन श्रीजी के प्रक्षाल पूजन से शुरुआत के साथ बच्चों एवं युवाओं ने भगवान के दर्शन पूजन की विधि सीखी। वहीं शिविर में सम्यक शास्त्री द्वारा शिविर में प्रतिदिन अपने सर्वोच्च देने वाले शिविरार्थियों में से एक को प्रतिदिन पुरस्कार मिलता है व सभी लकी ड्रा के माध्यम से भी प्रतिदिन पुरस्कार वितरण होता है इस मौके पर निखिल भैया जी ने 6 ढाला ग्रंथ में देवगति के बारे में बताते हुए कहा कि देव चार प्रकार के होते हैं देवगति के जीव इच्छा से वे मरण के भय,से देवियों के वियोग से, विषयों की चाहत से, अपने हीन पद के कारण दुखी हैं जितनी कषाय उतना दुख है जितनी कषाय चौकड़ी का अभाव होगा। उतना सुख होगा। उन्होंने कहा कि अपने को ऊंचा दूसरों को नीचा देखने से ईर्ष्या होती है जबकि भगवान महावीर स्वामी का प्रथम संदेश है सभी आत्माएं बराबर है कोई छोटा बड़ा नहीं है।

महासती मृगावती की संगीतमय कथा प्रारम्भ - इस मौके पर उन्होने कहा कि अपेक्षाकृत थोडे दुख वाले को हम सुखी कहते हैं पर वास्तव में वे भी सुखी नहीं है भोगो में दुख है,रत्नत्रय में सुख है। ऐसा व्यापार करो जिससे अनंत काल तक सुख मिले। निखिल भैया द्वारा सांयकालीन कक्षा में महासती मृगावती की संगीतमय कथा प्रारम्भ की। यह सती महावीर स्वामी की मौसी व माता त्रिशला की बहन थी। संगीतमय कथा से युवाओं में धर्म के प्रति उत्सुकता बढ़ती जा रही है। उसी प्रकार छोटी कक्षाओ में प्रतीक शास्त्री द्वारा छोटी छोटी परिभाषा को सरल उदाहरणों के माध्यम से छोटे बच्चों एवं युवाओं को समझाया। जिसमें

विश्व क्या होता है,द्रव्यों के समूह को विश्व कहते हैं। द्रव्य गुणों के समूह ग्रुप को द्रव्य कहते हैं आदि पर समझाया गया। साथ ही द्रव्य 6 होते हैं जीव, पुद्गल, धर्म, अधर्म, आकाश और काल। जीव जो जानता,देखता है और सुख दुःख का अनुभव करता है, वही जीव है जीव अनंत होते हैं। पुद्गल जिसमें स्पर्श, रस, गंध, वर्ण पाए जाए उसे पुद्गल द्रव्य कहते हैं। ये अनंतानंत होते हैं। धर्म स्वयं चलते हुए जीव और पुद्गल को चलने में जो द्रव्य निमित्त (सहायक) होता है, वह धर्म द्रव्य है। जैसे:- पानी मछली को चलने में निमित्त है। वह मछली को चलाता नहीं है, लेकिन जब मछली चलती है तब वह वहाँ होता है। इसलिए कह देते हैं कि पानी के कारण मछली चलती है। यह एक होता है। अधर्म स्वयं ठहरे हुए जीव और पुद्गल को जो ठहरने में निमित्त होता है, वह अधर्म द्रव्य है। जैसे चाय की टपरी पर कुछ देर विश्राम के लिए रुकना। अब चाय की टपरी किसी को पकड़कर रोकती नहीं है, लेकिन जब कोई वहाँ रुकता है, तो उस पर आरोप आता है कि उसके कारण वह रुका। अधर्म द्रव्य भी एक होता है। आकाश जो समस्त द्रव्यों को अवगाहन रहने के लिए जगह देने में सहायक होता है, वह आकाश द्रव्य है। यह भी एक ही होता है। काल जो जीवादि समस्त द्रव्यों के परिणमन में सहायक होता है, वह काल द्रव्य है। यह असंख्यात होते हैं। इस मौके पर प्रवक्ता शोभित जैन ने बताया कि सांयकालीन श्रीमती सुदर्शना जैन द्वारा पहली कक्षा के छोटे छोटे बच्चों जो कि 3 साल से 5 साल तक के बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम करवाया। जिसमें छोटे बच्चों ने सबका मनमोहक प्रदर्शन कर सभी का मन मोह लिया। चिरंतन शास्त्री, काव्य शास्त्री द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम का संचालन एवं भक्ति संध्या का आयोजन भी किया गया। साथ ही अध्यात्मिक ऊर्जा से भरे हुए कार्यक्रम युवाओं को धर्म की ओर अग्रसर कर रहे हैं।

जिनदेशना शिविर की झलकियाँ